

Manuscript

पिता परमेश्वर

प्रेरितों का विश्वास-कथन

अध्याय 2

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2021के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्‍त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं। सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

**संसार के लिए मुफ़्त में बाइबल आधारित शिक्षा।**

हमारा लक्ष्य संसार भर के हज़ारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ़्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठयक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसार भर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोडयूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडियो अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट्स भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती हैं और हमारे अध्यायों के लिए अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती हैं, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं, संस्थानों, व्यापारों और लोगों के उदार, टैक्स-डीडक्टीबल योगदानों पर आधारित हैं। हमारी सेवकार्इ के बारे में अधिक जानकारी के लिए, और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org को देखें।

विषय-वस्तु

[परिचय 1](#_Toc80702188)

[परमेश्वर 2](#_Toc80702189)

[एकात्मकता 2](#_Toc80702190)

[बहुईश्वरवाद 3](#_Toc80702191)

[एकेश्वरवाद 4](#_Toc80702192)

[मसीहियत 6](#_Toc80702193)

[सादगी 8](#_Toc80702194)

[सर्वसामर्थी परमेश्वर 10](#_Toc80702195)

[नाम 10](#_Toc80702196)

[व्यक्ति 12](#_Toc80702197)

[पितृत्व 14](#_Toc80702198)

[सृष्टिकर्ता 14](#_Toc80702199)

[राजा 15](#_Toc80702200)

[मुखिया 17](#_Toc80702201)

[सामर्थ 19](#_Toc80702202)

[असीम 19](#_Toc80702203)

[अतुल्य 21](#_Toc80702204)

[कर्ता 23](#_Toc80702205)

[सृष्टि का कार्य 23](#_Toc80702206)

[सृष्टि की अच्छाई 25](#_Toc80702207)

[सृष्टि पर अधिकार 27](#_Toc80702208)

[अन्तिम 27](#_Toc80702209)

[एकमात्र 28](#_Toc80702210)

[पूर्ण 29](#_Toc80702211)

[उपसंहार 30](#_Toc80702212)

परिचय

बहुत से धर्म एक अस्तित्व की पूजा करते हैं जिसे वे “परमेश्वर” कहते हैं। और यह एक रुचिकर प्रश्न का खड़ा करता है: क्या वे सब एक ही अस्तित्व की आराधना करते हैं, केवल विभिन्न नामों के द्वारा? या क्या वे बिल्कुल अलग देवताओं की आराधना करते हैं? बाइबल बताती है कि यद्यपि बहुत से अलग-अलग धर्म - “परमेश्वर” - शब्द का ही प्रयोग करते हैं परन्तु उनका अर्थ बहुत अलग होता है। पवित्र वचन बल देता है कि केवल एक सच्चा परमेश्वर है - जिसकी मसीही आराधना करते हैं। और इसका अर्थ है कि अन्य धर्मों के देवता धोखेबाज हैं, मूरतें हैं, झूठे ईश्वर हैं। इसी कारण मसीहियत ने हमेशा बाइबल के परमेश्वर को जानने पर अत्यधिक बल दिया है। वही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है, एकमात्र जिसमें रचने, नाश करने, और बचाने की सामर्थ है।

001

यह प्रेरितों के विश्वास-कथन की हमारी श्रृंखला का दूसरा अध्याय है, और इसका शीर्षक दिया है “पिता परमेश्वर।” इस अध्याय में, हम प्रेरितों के विश्वास-कथन में विश्वास के प्रथम सूत्र पर ध्यान देंगे - जो त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति, पिता परमेश्वर में विश्वास की पुष्टि करता है।

002

जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा, प्रेरितों का विश्वास-कथन कलीसिया की आरम्भिक सदियों में विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ। परन्तु इसे लगभग 700 ईस्वी में लैटिन भाषा में अन्तिम रूप दिया गया। इसका प्रचलित आधुनिक अनुवाद इस प्रकार है:

003

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,  
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।  
मैं उसके एकमात्र पुत्र, हमारे प्रभु, यीशु मसीह में विश्वास करता हूँ।  
जो पवित्र आत्मा से कुंवारी मरियम के द्वारा पैदा हुआ।  
उसने पोन्तियस पिलातुस के हाथों दुःख सहा, क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा गया और गाड़ा गया;  
वह अधोलोक में उतरा।  
तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा।  
वह स्वर्ग में चढ़ गया।  
और वह सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान है।  
जहां से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।  
मैं पवित्र आत्मा में,  
पवित्र सार्वभौमिक कलीसिया,  
पवित्र संतों की संगति,  
पापों की क्षमा में,  
देह के पुनरुत्थान में  
और अनन्त जीवन में विश्वास करता हूँ। आमीन।

004

आपको याद होगा कि इन अध्यायों में हमने प्रेरितों के विश्वास-कथन को पाँच मुख्य भागों में बाँटा है: पहले तीन भाग परमेश्वर के तीन व्यक्तित्वों के बारे में हैं: पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा। इसके बाद एक भाग कलीसिया पर है, और फिर एक भाग उद्धार पर है। इस अध्याय में, हम पाँच में से पहले भाग पर ध्यान केन्द्रित करेंगे, जो विश्वास के केवल एक सूत्र से निर्मित है:

005

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,  
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

006

इस विश्वास के सूत्र में वर्णित बिन्दुओं को कई प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। परन्तु इस अध्याय में हम तीन विषयों पर ध्यान देंगे जो मसीही धर्मविज्ञान में मुख्य रहे हैं: परमेश्वर का विचार, सर्वशक्तिमान पिता का व्यक्तित्व, और सारी सृष्टि के रचयिता के रूप में उसकी भूमिका।

007

इन विषयों के अनुसार, पिता परमेश्वर पर हमारा अध्याय तीन भागों में विभाजित होगा। पहले हम बाइबल द्वारा परमेश्वर के अस्तित्व और स्वभाव के बारे में सिखाई गई कुछ सामान्य बातों को देखते हुए, परमेश्वर के बारे में मूलभूत विचार की बात करेंगे। दूसरा, त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के कुछ विशेष गुणों पर ध्यान देते हुए, “सर्वशक्तिमान पिता” शब्द पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। और तीसरा, हम सारी सृष्टि के रचयिता, या सृष्टिकर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखेंगे। आइए हम परमेश्वर के विचार को देखें जिसे बाइबल हमारे सामने प्रस्तुत करती है।

008

परमेश्वर

परमेश्वर पर हमारा विश्वास बाकी सबके बारे में हमारे विश्वास का मूल है। और इसलिए यदि इस दृष्टिकोण के अनुसार सोचें, परमेश्वर केन्द्र में है, और शेष सब कुछ उसके साथ अपने संबंध के कारण ही अपने रूप में विद्यमान है। और यह परमेश्वर-केन्द्रित सोच को हमारी संस्कृति की सामान्य सोच से बिल्कुल अलग स्तर पर ला खड़ा करती है, जो स्व-केन्द्रित है, मैं-केन्द्रित है, और इस तरह है कि शेष सब कुछ, परमेश्वर सहित, किस प्रकार मुझ से संबंधित है। और वह बाइबल के दृष्टिकोण के विपरीत है, और मैं सोचता हूँ, मैं कहने की हिम्मत कर रहा हूँ, यह परमेश्वर के दृष्टिकोण से भी बिल्कुल अलग है जिसे पवित्र वचन प्रकट करता है। अत:, आज सेवकाई में, मैं-केन्द्रियता को चुनौती देना बहुत महत्वपूर्ण है, जो हमारे लिए बहुत स्वाभाविक है, और मैं-केन्द्रित दृष्टिकोण की जगह परमेश्वर-केन्द्रियता और परमेश्वर-केन्द्रित दृष्टिकोण को रखने का प्रयास करना जरूरी है। (डॉ. जे. आई. पैकर)

009

हम दो विषयों के आधार पर पवित्र वचन में प्रस्तुत परमेश्वर के मूल विचार को देखेंगे। एक तरफ, हम इस बात को देखेंगे जिसे धर्मविज्ञानी अक्सर “परमेश्वर की एकात्मकता” कहते हैं, यह तथ्य कि केवल वही एकमात्र परमेश्वर है जो विद्यमान है। और दूसरी तरफ, हम परमेश्वर की सरलता पर ध्यान देंगे, इसे देखते हुए कि वह वास्तव में एक परमेश्वर है, इस तथ्य के बावजूद कि उसके तीन व्यक्तित्व हैं। आइए हम परमेश्वर की एकात्मकता से शुरू करें, यह धर्मशिक्षा, कि बाइबल का परमेश्वर ही एकमात्र और सच्चा परमेश्वर है।

010

एकात्मकता

जब हम परमेश्वर की एकात्मकता का अनुसंधान करते हैं, तो पहले हम बहुईश्वरवाद को देखेंगे जो कलीसिया की प्रारम्भिक सदियों के दौरान संसार में फैला हुआ था। दूसरा, हम एक ईश्वर की पुष्टि के रूप में एकेश्वरवाद को देखेंगे। और तीसरा, हम मसीहियत और परमेश्वर के बारे में इसकी धारणा पर बात करेंगे। आइए पहले हम बहुदेववाद के शीर्षक पर चलें।

011

बहुईश्वरवाद

बहुईश्वरवाद कई देवताओं - सामर्थी, अलौकिक व्यक्तित्वों के अस्तित्व पर विश्वास है जो ब्रह्माण्ड को नियन्त्रित करते हैं। ऐसे कुछ देवताओं को अनन्त, स्वयंभू अस्तित्व माना जाता है, जबकि दूसरों के बारे में माना जाता है कि उन्होंने जन्म लिया है या वे रचे गए हैं। बहुईश्वरवादी प्रणालियों में देवता अक्सर एक दूसरे से अलग होते हैं, और इस कारण एक तरह से अद्वितीय होते हैं, जैस सारे मनुष्य अपने आप में अद्वितीय हैं। परन्तु बहुईश्वरवाद में, कोई भी एक देवता यह दावा नहीं कर सकता है कि वही एकमात्र अलौकिक अस्तित्व है जो ब्रह्माण्ड को अपने वश में रखता है।

012

बहुईश्वरवाद का एक प्रचलित रूप, जो हिनोथिज़्म कहलाता है, दूसरे देवताओं के अस्तित्व का इनकार किए बिना मुख्य रूप से एक देवता के प्रति समर्पण को अभिव्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, रोमी साम्राज्य में कुछ लोग ज्यूस को सर्वोच्च देवता मानने के बावजूद दूसरे देवताओं के अस्तित्व को अंगीकार करते थे।

013

आरम्भिक कलीसिया के संसार में, अधिकांश गैर-मसीही बहुईश्वरवादी थे। बहुत से लोग यूनानियों और रोमियों के झूठे देवताओं को मानते थे, जबकि दूसरे लोग प्राचीन पूरब की मूरतों की पूजा करते थे। ऐसे बहुईश्वरवादी भी थे जो धरती की ताक़तों को मानते थे, और कुछ लोग पदार्थों या सृष्टि के अन्य पहलूओं की पूजा करते थे। नास्तिकता - यह विश्वास कि कोई ईश्वर नहीं है - बहुत विरल थी।

014

विभिन्न देवताओं में विश्वास के जनसाधारण में फैले होने का एक कारण यह था कि बहुईश्वरवाद कानून की माँग थी। उदाहरण के लिए, रोमी साम्राज्य में, सरकार रोमी देवताओं की पूजा को लागू करती थी। रोमी इस आराधना की मांग अपने देवताओं को खुश करने और साम्राज्य की सुरक्षा के लिए करते थे। परन्तु विभिन्न देवताओं में विश्वास का मूलभूत कारण मनुष्यों का पापी होना था।

015

बाइबल संकेत करती है कि मनुष्यों में सच्चे परमेश्वर से झूठे देवताओं की ओर फिरने की प्रवृत्ति है। यह विशेष रूप से बाइबल की पाप की धर्मशिक्षा से संबंधित है। यह इस तथ्य से ज्यादा संबंधित नहीं है कि हम एक महान सृष्टिकर्ता की सृष्टि हैं बल्कि इससे कि परमेश्वर के सम्मुख हम पापी हैं। पाप इस तरह से कार्य करता है कि वह परमेश्वर द्वारा सृष्टि में प्रकट परमेश्वर के सत्य के संबंध में हमारी आँख को अन्धा कर देता है। और इस कारण, अपने हाल पर छोड़ दिए जाने पर हम वास्तव में परमेश्वर या दिव्य गुणों के रूप में उनकी पहचान करते हैं जिनका परमेश्वर से कोई संबंध ही नहीं है। अन्य शब्दों में, हम सच्चे परमेश्वर के स्थानापन्न के रूप में स्वयं की कल्पना से देवताओं का निर्मित करे लेंगे।

016

डॉ. डेविड बोर

जैसे पवित्र वचन सिखाता है, अपने दिल की गहराई में सब लोग जानते हैं कि ब्रह्माण्ड एक दिव्य सृष्टिकर्ता के हाथ के बिना उत्पन्न नहीं हो सकता है। परन्तु अपने पाप में, मनुष्य स्वाभाविक रूप से सच्चे परमेश्वर को अंगीकार नहीं करते हैं और इन बातों के लिए उसे श्रेय नहीं देते हैं। इसकी बजाय, उसके कार्य का श्रेय हम दूसरे स्रोतों को देते हैं। सुनें पौलुस रोमियों अध्याय 1 पद 20 से 23 में इसके बारे में क्या कहता है:

017

क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। इस कारण कि परमेश्वर को जानने पर भी उन्हों ने परमेश्वर के योग्य बड़ाई और धन्यवाद न किया, परन्तु व्यर्थ विचार करने लगे, यहां तक कि उनका निर्बुद्धि मन अन्धेरा हो गया...(उन्होंने) अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशमान मनुष्य, और पक्षियों, और चौपायों, और रेंगनेवाले जन्तुओं की मूरत की समानता में बदल डाला। (रोमियों 1:20-23)

018

पौलुस के अनुसार, पवित्र वचन के परमेश्वर का अस्तित्व हर व्यक्ति पर स्पष्ट है - यह प्रकट है और पूरी तरह साफ है। पौलुस यहां तक कहता है कि मनुष्य परमेश्वर को प्रकृति में उसके स्व-प्रकाशन के द्वारा जानते हैं। परन्तु हम इतने पापी हैं कि हमने उसकी महिमा करने या उसे धन्यवाद कहने से इनकार कर दिया। इसके विपरीत, हमने उसकी महिमा को अपने द्वारा बनाए गए झूठे ईश्वरों से बदल दिया और उसके स्थान पर उनकी आराधना करने लगे।

019

बाइबल हमें बताती है कि सारे पुरुष और स्त्री और बच्चे अपने दिल की गहराई में, अपने मन में, और अपने विवेक में परमेश्वर को जानते हैं। परन्तु रोमियों अध्याय 1 हमें बताता है कि जब से आदम और हव्वा ने पाप किया, अपने दिल की गहराइयों में हम सच्चे परमेश्वर की आराधना से मूरतों और परमेश्वर द्वारा रची किसी भी वस्तु की आराधना की ओर फिर गए। और इसलिए मानवीय मन व्यवहारिक रूप में एक कारखाना है, एक स्रोत, हर प्रकार की मूरतों की जड़। (डॉ. सैमुएल लिंग)

020

बहुईश्वरवाद की इस तस्वीर को ध्यान में रखते हुए, हम एकेश्वरवाद, इस विश्वास को देखने के लिए तैयार हैं कि केवल एक ही ईश्वर का अस्तित्व है।

021

एकेश्वरवाद

तकनीकी रूप में, एकेश्वरवाद किसी भी धर्म के बारे में इंगित कर सकता है जो एक ईश्वर में विश्वास की पुष्टि करता है। उदाहरण के लिए, आधुनिक संसार में, यहूदी, मसीही और इस्लाम सभी एकेश्वरवादी धर्म हैं क्योंकि ये सब बल देते हैं कि केवल एक और एकमात्र दिव्य अस्तित्व है।

022

बाइबल में बहुत से पद्यांश साफ रूप से यह कहने के द्वारा, कि परमेश्वर केवल एक है, परमेश्वर की एकात्मकता पर जोर देते हैं। कुछ उदाहरणों को देखें। 1 राजा अध्याय 8, पद 60 में सुलैमान ने कहा:

023

...यहोवा ही परमेश्वर है, और कोई दूसरा नहीं। (1 राजा 8:60)

024

भजन 86 पद 10 में, दाऊद ने यहोवा के लिए गाया:

025

केवल तू ही परमेश्वर है। (भजन 86:10)

026

2 राजा अध्याय 19 पद 19, हिजकियाह ने प्रार्थना की:

027

केवल तू ही यहोवा है। (2 राजा 19:19)

028

रोमियों अध्याय 3 पद 30 में, पौलुस बल देता है:

029

एक ही परमेश्वर है। (रोमियों 3:30)

030

और याकूब अध्याय 2 पद 19 में, याकूब कहता है:

031

तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है: तू अच्छा करता है! (याकूब 2:19)

032

एक ही दिव्य अस्तित्व है। यह पुराने नियम के दिनों में सत्य था। यह नये नियम के दिनों में सत्य था। यह कलीसिया की आरम्भिक सदियों में सत्य था। और यह आज भी सत्य है।

033

अब, हमें यह बताने की आवश्यकता है कि सारे एकेश्वरवादी धर्म एक ही ईश्वर की आराधना नहीं करते हैं। जैसा हमने कहा, यहूदी, मसीहियत और इस्लाम में एक ईश्वर की आराधना की जाती है। और इससे बढ़कर, ये सब कम से कम नाम में, इस परमेश्वर की पहचान इब्राहीम के परमेश्वर के रूप में करते हैं। परन्तु जिन धारणाओं को वे “इब्राहीम का परमेश्वर” के नाम से जोड़ते हैं वे बिल्कुल अलग हैं। उनमें उसके चरित्र, उसके दिव्य कार्यों, और यहां तक कि उसके स्वभाव के बारे में असहमति है।

034

यहूदी धर्म को देखें। यहूदी धर्म के विश्वास का आधार पुराना नियम है, मसीही भी यही करते हैं। परन्तु वे त्रिएक परमेश्वर का इनकार करते हैं जिसे बाइबल प्रकट करती है। वास्तव में, वे त्रिएकत्व के प्रत्येक व्यक्ति का इनकार करते हैं। वे यीशु को प्रभु और देहधारी परमेश्वर नहीं मानते हैं। वे इस बात से इनकार करते हैं कि पवित्र आत्मा एक दिव्य व्यक्ति है। और यीशु तथा पवित्र आत्मा का इनकार करने के द्वारा वे पिता का इनकार करते हैं जिसने उन्हें भेजा। जैसे स्वयं यीशु ने लूका अध्याय 10 पद 16 में कहा:

035

जो मुझे तुच्छ जानता है वह मेरे भेजनेवाले को तुच्छ जानता है। (लूका 10:16)

036

यहूदी धर्म यीशु और पवित्र आत्मा का इनकार करता है, इस कारण पिता का भी इनकार करता है।

037

यहूदी धर्म का विश्वास है कि वह परमेश्वर की आराधना इस प्रकार से करता है जिस प्रकार वह पुराने नियम में प्रकट है। यह उसी पुराने नियम की ओर इशारा है जिस से मसीही प्रेम करते हैं और कहते हैं, “हम उस परमेश्वर की आराधना करते हैं।” अत:, बाह्य तौर पर, एक अर्थ है जिस में हम कह सकते हैं कि हम एक ही परमेश्वर की आराधना करते हैं। परन्तु दूसरे अर्थ में उनका ईश्वर हमारे से अलग है क्योंकि उन्होंने यीशु में परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को स्वीकार नहीं किया है।

038

और जब हम इस्लाम को देखते हैं, यह और अधिक स्पष्ट हो जाता है कि परमेश्वर के बारे में उनका विचार बाइबल के विरूद्ध है।

039

एक महत्वपूर्ण सवाल है: एक परमेश्वर के विचार के बारे में इस्लामी विश्वास क्या दावा करता है? मेरा विश्वास है कि इस्लाम परमेश्वर में एक प्रकार की एकता की पुष्टि करता है, परन्तु इस्लाम की बजाय मसीहियत यहोवा के साथ विभिन्न विशेषताओं और गुणों को जोड़ती है। हमारे पास छुटकारे और देहधारण की धर्मशिक्षाएँ हैं, और वे महत्वपूर्ण धर्मशिक्षाएँ हैं जो हमारे प्रभु के चरित्र को लोगों के जीवन में एक स्पष्ट और मूलभूत तरीके से बताती हैं। छुटकारा और देहधारण दोनों परमेश्वर की एकता के संबंध में मुसलमानों की समझ से गायब हैं।

040

डॉ. रायड केसिस, अनुवाद

परमेश्वर के बारे में इस्लामी विचार वास्तव में बाइबल के विरूद्ध है, और इसमें सबसे महत्वपूर्ण इस्लाम का यह दावा है कि उसके समान और कोई नहीं है। इस्लाम में, यदि मैं उस तकनीकी शब्द को समझा सकूँ, कि परमेश्वर बिल्कुल एक है और उसके अन्दर अस्तित्व का कोई समुदाय नहीं है। मसीही धर्मविज्ञान में एकेश्वरवाद यानी इस विश्वास के प्रति पूरी वफादारी है कि परमेश्वर केवल एक है। बाइबल का शुरुआती विश्वास-कथन है, “हे इस्राएल सुन, तेरा परमेश्वर यहोवा, केवल वही परमेश्वर है।” इसलिए एकेश्वरवाद पर अत्यधिक बल शुरूआत से ही यहूदी-मसीही धर्मविज्ञानी परम्परा का हिस्सा रहा है। और इसलिए मसीही एकेश्वरवादी हैं। लेकिन हमारे बहुत से इस्लामी मित्र इसे नहीं मानते हैं। वे सोचेंगे कि हम तीन ईश्वरों को मानते हैं। और वे वास्तव में सोचते हैं कि आप पिता में, और माता में, और पुत्र में विश्वास करते हैं, क्योंकि मुहम्मद की परमेश्वर के बारे में मसीही धर्मशिक्षा की समझ गलत थी। परन्तु त्रिएकत्व की मसीही धर्मशिक्षा - कि एक परमेश्वर अनन्त रूप से तीन व्यक्तियों, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा में विद्यमान है, जो केवल एक परमेश्वर की अभिव्यक्ति की विभिन्न शैलियाँ नहीं हैं और न ही वे एक परमेश्वर के लिए प्रयुक्त तीन अलग-अलग रूपक हैं, परन्तु उस एक सच्चे परमेश्वर में व्यक्तियों के बीच वास्तविक और तात्विक संगति है - यह इस्लाम की परमेश्वर की धारणा से बिल्कुल भिन्न है।

041

डॉ. जे. लिगोन डन्कन तृतीय

अत: यहूदी धर्म, मसीहियत और इस्लाम सभी एकेश्वरवादी धर्म हैं। ये सब बहुईश्वरवाद से भिन्न हैं क्योंकि वे कई देवताओं के अस्तित्व का इनकार करते हैं। परन्तु परमेश्वर के बारे में अपनी अलग-अलग धर्मशिक्षाओं के कारण वे एक दूसरे से भी बिल्कुल भिन्न हैं।

042

बहुईश्वरवाद और एकेश्वरवाद को देखने के बाद, हम मसीहियत द्वारा प्रमाणित और प्रेरितों के विश्वास-कथन में सिखाए गए परमेश्वर के विचार का वर्णन करने के लिए तैयार हैं।

043

मसीहियत

प्रेरितों के विश्वास-वचन में परमेश्वर के बारे में दिया गया कथन बिल्कुल स्पष्ट है। यह कहता है:

044

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,   
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

045

आप देखेंगे कि विश्वास-वचन स्पष्ट रूप से यह नहीं कहता है कि परमेश्वर एक ही है। यदि हम विश्वास-वचन की उत्पत्ति को नहीं जानते, तो इन शब्दों को यहूदियों के ईश्वर या इस्लाम के ईश्वर में विश्वास की घोषणा के रूप में भी पढ़ा जा सकता था। या बहुत से ईश्वरों के बीच में एक की पुष्टि के रूप में भी। तो हम कैसे जानते हैं कि यह गैर-मसीही एकेश्वरवाद या बहुईश्वरवाद के विपरीत मसीहियत के त्रिएक परमेश्वर के बारे में बात कर रहा है?

046

एक तरफ, परमेश्वर के बारे में साफ रूप से कही गई अन्य बातों के द्वारा विश्वास-वचन गैर-मसीही एकेश्वरवाद का इनकार करता है। जैसा हमने पिछले अध्याय में देखा, विश्वास-वचन एक त्रिएक सूत्र के आधार पर निर्मित है। यह इस विश्वास को प्रतिबिम्बित करता है कि पिता परमेश्वर, उसका एकलौता पुत्र यीशु मसीह और पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व के तीन अलग-अलग व्यक्ति हैं, दिव्य तत्व में सब एक समान हैं।

047

फिर, याद करें कि विश्वास-वचन विश्वासों के सारांश के रूप में लिखा गया था, न कि विश्वास के पूर्ण कथन के रूप में। और जब इसे कलीसियाई आराधना विधि में प्रयोग किया गया तो कलीसिया में हर व्यक्ति जानता था कि परमेश्वर के इन तीन व्यक्तियों का इस प्रकार वर्णन करने का निहितार्थ है त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा का प्रतिपादन।

048

दूसरी तरफ, विश्वास-वचन सामान्य शब्द “ईश्वर” के एकवचन रूप का दिव्य नाम के रूप में प्रयोग करने के द्वारा बहुईश्वरवाद का इनकार करता है।

049

“ईश्वर” शब्द के कई अर्थ हो सकते हैं। कई धर्म अपने देवताओं को “ईश्वर” कहते हैं। और बाइबल भी दुष्टात्माओं, मूरतों, और संभवत: मानवीय अगुवों के लिए भी “ईश्वर” शब्द का प्रयोग करती है। लेकिन इन सारे “ईश्वरों” के अपने नाम भी हैं। उदाहरण के लिए, प्राचीन रोम के धर्म में, मंगल युद्ध का ईश्वर था, वरुण समुद्र का देवता था, और बृहस्पति ईश्वरों का नेता था।

050

इसी तरह, पवित्र वचन का परमेश्वर वास्तविक नामों से जाना जाता है। उनमें से अधिकांश विवरणात्मक हैं, जैसे एल शदाई, जिसका अनुवाद है “सर्वसामर्थी परमेश्वर,” अर्थ है परमेश्वर जो सबसे ताकतवर है; और एल एल्योन, जिसका अनुवाद है “सर्वोच्च परमेश्वर,” यानी परमेश्वर जो सबके ऊपर राज करता है; और अदोनाई, जिसका अनुवाद है “प्रभु,” और अर्थ है स्वामी या शासक।

051

परन्तु परमेश्वर का सबसे नजदीकी नाम जिसे हम परमेश्वर के उचित नाम के रूप में सोच सकते हैं वह है यहोवा। पुराने अनुवादों में यह जेहोवा के रूप में आता है। परन्तु नये अनुवादों में इसे “प्रभु,” कहा जाता है यद्यपि इसका अर्थ अदोनाई से अलग है।

052

मानवीय इतिहास की शुरूआत में परमेश्वर ने अपने आपको यहोवा के नाम से प्रकट किया। उदाहरण के लिए, मनुष्य परमेश्वर के लिए इस नाम का प्रयोग आदम के पुत्र शेत के समय से करते आ रहे हैं, जैसा हम उत्पत्ति अध्याय 4 पद 26 में देखते हैं। नूह ने परमेश्वर को उत्पत्ति अध्याय 9 पद 26 में यहोवा कहकर संबोधित किया। और इब्राहीम ने उत्पत्ति अध्याय 12 पद 8 में परमेश्वर को इस नाम से पुकारा।

053

यहोवा वह नाम है जिसे परमेश्वर ने निर्गमन अध्याय 3 पद 13 में मूसा को बताया, जहाँ हम इस अभिलेख को पढ़ते हैं:

054

मूसा ने परमेश्वर से कहा, “जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे यह कहूं, कि तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, तब यदि वे मुझ से पूछें, कि उसका नाम क्या है? तब मैं उनको क्या बताऊँ?” परमेश्वर ने मूसा से कहा, “मैं जो हूँ सो हूँ। फिर उस ने कहा, तू इस्राएलियों से यह कहना, कि जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।” (निर्गमन 3:13-14)

055

यहोवा नाम इब्रानी शब्द “एह़येह” से संबंधित है, जिसका अनुवाद यहाँ “मैं” किया गया है। यह सबसे घनिष्ठ नाम है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों पर प्रकट किया है, और यह नाम, और किसी नाम से अधिक, उसे झूठे ईश्वरों से अलग ठहराता है।

056

वास्तव में, बाइबल में बताए गए यहोवा के सारे नामों में, “परमेश्वर” सबसे सामान्य है। हमारे आधुनिक पुराने नियमों में परमेश्वर शब्द आमतौर पर इब्रानी शब्द एल या एलोहीम का अनुवाद होता है। और नये नियम में, यह आमतौर पर यूनानी शब्द थियोस का अनुवाद करता है। परन्तु बाइबल के समयों में, अन्य धर्म अपने देवताओं के लिए इन्हीं नामों का प्रयोग करते थे। तो प्रेरितों के विश्वास-वचन ने यहोवा जैसे विशिष्ट नाम की बजाय परमेश्वर के लिए सामान्य नाम को क्यों चुना? क्योंकि परमेश्वर की पहचान कराने के लिए साधारण शब्द “परमेश्वर” के प्रयोग द्वारा प्रेरितों का विश्वास-वचन इंगित करता है कि केवल मसीहियत का परमेश्वर ही “परमेश्वर” कहलाने के योग्य है। जैसे हम 1 राजा अध्याय 8 पद 60 में पढ़ते हैं:

057

यहोवा ही परमेश्वर है और कोई दूसरा नहीं। (1 राजा 8:60)

058

हाँ, दूसरे धर्म विश्वास करते हैं कि वे वास्तविक देवताओं की आराधना करते हैं। परन्तु वास्तविकता में, वे काल्पनिक अस्तित्वों या दुष्टात्माओं की आराधना करते हैं - निम्नस्तरीय, सृष्टि की गई आत्माएँ है जिन पर मसीही परमेश्वर राज करता है। पौलुस ने इसे 1 कुरिन्थियों अध्याय 10 पद 20 में स्पष्ट किया, जहाँ उसने इन शब्दों को लिखा:

059

अन्यजाति जो बलिदान करते हैं वे परमेश्वर के लिए नहीं वरन् दुष्टात्माओं के लिए बलिदान करते हैं। (1 कुरिन्थियों 10:20)

060

अन्यजाति नहीं मानते थे कि वे दुष्टात्माओं को बलिदान चढ़ाते थे; बल्कि उनका मानना था कि वे विभिन्न देवताओं को बलिदान चढ़ाते थे। परन्तु वे गलत थे।

061

आज संसार में मसीहियत के अतिरिक्त बहुत से धर्म हैं। हिन्दू धर्म, शिन्टो, विक्का, इस्लाम, यहूदी धर्म, कबीलाई धर्म इत्यादि हैं। परन्तु उनके ईश्वर झूठे हैं। कुछ दुष्टात्माओं की पूजा करते हैं। कुछ सृष्टि की आराधना करते हैं। और कुछ काल्पनिक वस्तुओं की आराधना करते हैं। परन्तु बाइबल जोर देती है कि केवल मसीही परमेश्वर ही वास्तव में दिव्य है; केवल मसीही परमेश्वर ही संसार का न्याय करेगा; और केवल मसीही परमेश्वर ही हमें बचाने की सामर्थ रखता है।

062

अपने पहले विश्वास के सूत्र में, प्रेरितों का विश्वास-वचन नये मसीहियों से मांग करता है कि वे झूठे देवताओं को त्याग दें जिनकी वे आराधना किया करते थे, और पवित्र वचन के परमेश्वर को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में अंगीकार करें। और यह बुलाहट पवित्र वचन की आवश्यक शिक्षा को प्रतिबिम्बित करती है। बाइबल हर युग में हर व्यक्ति पर यह जिम्मेदारी डालती है कि वह यह अंगीकार करे कि पुराने और नये नियम का परमेश्वर ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। और यह मांग करती है कि वे केवल उसकी आराधना करें।

063

अब जबकि हम परमेश्वर की एकात्मकता को देख चुके हैं, तो हम उसकी सादगी, उसकी प्रकृति या तत्व की एकता पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए तैयार हैं।

064

सादगी

आपको याद होगा जब हमने एक पिछले अध्याय में त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा को परिभाषित किया तो हमने इस प्रकार कहा था: परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं, परन्तु तत्व केवल एक है। हमने यह भी कही कि “व्यक्ति” शब्द एक अलग, स्व-जागरूक व्यक्तित्व को दिखाता है, और “तत्व” शब्द परमेश्वर की मूलभूत प्रकृति को दिखाता है, या फिर पदार्थ जिस से वह बना है। जब हम परमेश्वर की सादगी के बारे में बात करते हैं, तो हमारे मन में उसका तत्व होता है - उसकी आधारभूत प्रकृति, पदार्थ जो उसके अस्तित्व को बनाता है।

065

अब, धर्मविज्ञानी “साधारण” और “सादगी” जैसे शब्दों का प्रयोग तकनीकी रूप से करते हैं। हम यह नहीं कह रहे हैं कि परमेश्वर इस अर्थ में साधारण है कि उसे समझना आसान है। इसके विपरीत, हमारा मतलब है कि उसका तत्व विभिन्न पदार्थों का मेल नहीं है बल्कि केवल एक पदार्थ से निर्मित एकीकृत सम्पूर्णता है।

066

हम शुद्ध जल की कीचड़ से तुलना करके सादगी के इस विचार को समझा सकते हैं। एक तरफ, जल को एक साधारण पदार्थ के रूप में देखा जा सकता है। यह केवल पानी से बना है, और कुछ नहीं। परन्तु यदि हम अपने शुद्ध जल में मिट्टी मिला दें, तो यह कीचड़ बन जाता है। कीचड़ एक जटिल पदार्थ है क्योंकि यह दो अलग-अलग हिस्सों से बना है: जल और मिट्टी। परमेश्वर का तत्व पूर्णत: शुद्ध जल के समान है: यह केवल एक पदार्थ से निर्मित है।

067

लेकिन यह महत्वपूर्ण क्यों है? मसीहियत इस बात पर बल क्यों देती है कि परमेश्वर साधारण है और अलग-अलग पदार्थों से निर्मित नहीं है? इस सवाल का जवाब देने के लिए, आइए हम एक बार फिर त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा को देखें। त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा कहती है कि: परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं, परन्तु तत्व केवल एक है।

068

त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा का केन्द्र व्यक्ति और तत्व के बीच का अन्तर है। तत्व के अनुसार परमेश्वर एक है और व्यक्ति के अनुसार तीन। वास्तव में हम कह सकते हैं कि परमेश्वर के साथ एक “क्या” और तीन “कौन” हैं। (डॉ. कीथ जाँनसन)

069

जितना बलपूर्वक बाइबल इस बात पर जोर देती है कि परमेश्वर में तीन व्यक्ति हैं - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा - उतना ही बल इस बात पर देती है कि परमेश्वर केवल एक है। और कलीसिया के जीवन में बहुत जल्दी, धर्मविज्ञानियों ने निर्धारित कर लिया कि परमेश्वर के एक होने के बारे में बोलने का उपयोगी तरीका उसके तत्व या पदार्थ के संबंध में बोलना था। अत:, जब उन्होंने कहा कि परमेश्वर में एक साधारण, एकीकृत तत्व है, तो वे इस बात का इनकार कर रहे थे कि पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा तीन भिन्न परमेश्वर हैं जो किसी प्रकार त्रिएकत्व में जुड़ गए। और इसकी बजाय, वे पुष्टि कर रहे थे कि ये तीन व्यक्ति हमेशा से एक साथ एकमात्र परमेश्वर के रूप में विद्यमान रहे हैं।

070

इस प्रकार, कलीसिया ने इसे पूरी तरह से स्पष्ट कर दिया कि मसीही तीन परमेश्वरों पर विश्वास नहीं करते हैं, जैसा कि अक्सर दूसरे धर्मों द्वारा हम पर दोष लगाया जाता है। इसके विपरीत, हम केवल एक परमेश्वर पर विश्वास करते हैं - एक दिव्य अस्तित्व - जो तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान है।

071

अक्सर मुसलमानों के साथ बात करने पर वे कहते हैं, त्रिएकत्व का मसीही विचार तीन परमेश्वरों या तीन ईश्वरों पर विश्वास की पुष्टि है। कलीसिया के इतिहास में किसी ने कभी इसकी पुष्टि नहीं की है क्योंकि इस पुष्टि के साथ कि पिता परमेश्वर है, पुत्र परमेश्वर है, और पवित्र आत्मा परमेश्वर है, उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक इस बात की भी पुष्टि की गई है कि परमेश्वर एक है। जीवित और सच्चा परमेश्वर एक है। अत: परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन को समझने का एकमात्र मार्ग यह कहना है, परमेश्वर एक है, और कोई दूसरा नहीं; पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा उस एक परमेश्वरत्व का हिस्सा हैं। कलीसिया की यह भाषा रही है कि वे उस एक परमेश्वरत्व में तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान हैं और इसी कारण हम तीन ईश्वरों के होने की पुष्टि नहीं करते हैं। एक परमेश्वर, लेकिन तीन व्यक्तियों में। इसे पवित्र वचन में सिखाया गया है, कलीसिया ने इसकी पुष्टि की है और यह वास्तव में हमें इस प्रकार हमारे सारे धार्मिक प्रतिद्वन्दियों से अलग करता है।

072

डॉ. स्टीफन वेलम

इस विचार को स्पष्ट रूप में एक और प्राचीन विश्वास-वचन में बताया गया है - नाईसीन विश्वास-वचन - जो कहता है:

073

यीशु मसीह, परमेश्वर का एकलौता पुत्र... पिता के साथ तत्व में एक है।

074

प्रेरितों का विश्वास-वचन नाईसीन विश्वास-वचन से अधिक मूलभूत होने के कारण, यह इस विवरण का स्पष्ट वर्णन नहीं करता है। फिर भी, इसमें यह विचार निहित है कि हम केवल एक परमेश्वर में विश्वास करते हैं जो तीन व्यक्तियों के रूप में विद्यमान है।

075

एक परमेश्वर के तीन व्यक्तियों में विद्यमान होने पर मसीहियों के विश्वास करने के इस तथ्य के मसीही जीवन के लिए अनगिनत अर्थ हैं। उदाहरण के लिए, पारम्परिक मसीही आराधना सर्वदा से पूरी तरह त्रिएक रही है: हम त्रिएकत्व के तीनों व्यक्तियों की आराधना करते हैं, और हम अपने स्तुति गीतों और प्रार्थना विनतियों को उनमें से प्रत्येक के सम्मुख पेश करते हैं। किसी एक के पक्ष में त्रिएकत्व के किसी भी व्यक्ति को अनदेखा करना स्वयं परमेश्वर को अनदेखा करना है। हमारा आदर, सेवा और प्रेम पिता के लिए, पुत्र के लिए, और पवित्र आत्मा के लिए है क्योंकि वे सब एक परमेश्वर हैं।

076

परमेश्वर के बारे में मूलभूत मसीही विचार और उसके अस्तित्व की प्रकृति को बताने के बाद, हम सर्वसामर्थी पिता शब्द पर ध्यान केन्द्रित करने, बाइबल द्वारा त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति, पिता परमेश्वर के बारे में सिखाई गई विशिष्ट बातों को देखने के लिए तैयार हैं।

077

सर्वसामर्थी परमेश्वर

सर्वसामर्थी परमेश्वर पर हमारी चर्चा चार भागों में विभक्त होगी। पहला, हम पवित्र वचन में परमेश्वर के लिए “पिता” शब्द को प्रयोग किए जाने के तरीके को देखेंगे। दूसरा, हम त्रिएकत्व के संबंध में पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखेंगे। तीसरा, हम उसके पितृत्व की प्रकृति, पिता की भूमिका में उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों को देखेंगे। और चौथा, हम उसकी सामर्थ पर चर्चा करेंगे। पहले “पिता” शब्द को देखें जिस प्रकार इसे पवित्र वचन में परमेश्वर के लिए प्रयोग किया गया है।

078

नाम

बाइबल कम से कम तीन अलग-अलग अर्थों में “पिता” शब्द का प्रयोग करती है। पहला, इसे सारी वस्तुओं के सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर के लिए प्रयोग किया गया है। नये नियम में इस अर्थ में इसके प्रयोग का एक उदाहरण 1 कुरिन्थियों 8:6 है जहाँ पौलुस पिता की पहचान ऐसे व्यक्ति के रूप में करता है जिसके द्वारा सब कुछ विद्यमान है। अब, यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि इस अर्थ में परमेश्वर को पिता के रूप में संबोधित करने वाला प्रत्येक धर्मशास्त्रीय पद त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के बारे में नहीं है। “पिता” शब्द का दूसरा प्रयोग विश्वासियों को पुत्र और पुत्रियों के रूप में गोद लेने के परिणामस्वरूप परमेश्वर के साथ बने उनके रिश्ते को दिखाता है। जब पौलुस रोमियों 8:15 में कहता है कि हमें लेपालकपन की आत्मा मिली है जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं, तो वह इस दूसरे अर्थ में “पिता” शब्द का प्रयोग कर रहा है। अन्त में, “पिता” शब्द यीशु मसीह और उसके पिता के बीच विद्यमान अद्वितीय रिश्ते को दिखाता है। हम इन तीन प्रयोगों का यह कहने के द्वारा संक्षेपण कर सकते हैं कि पहला सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बारे में बताता है, दूसरा छुटकारा देने वाले परमेश्वर के बारे में बताता है, और तीसरा विशेषत: पुत्र के संबंध में पिता के व्यक्तित्व को बताता है।

079

डॉ. कीथ जाँनसन

दुर्भाग्यवश, कुछ मसीहियों को यह सोचना गलत है कि जब भी बाइबल “पिता” शब्द का प्रयोग करती है, तो यह त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के बारे में बात करती है। परन्तु त्रिएकत्व की धर्मशिक्षा नये नियम के आने तक स्पष्टत: प्रकट नहीं थी। पुराने नियम में यहाँ वहाँ कुछ संकेत हैं जो परमेश्वरत्व में एक से अधिक व्यक्तियों के होने की ओर संकेत कर सकते हैं। परन्तु पुराना नियम परमेश्वर के एक होने पर अत्यधिक बल देता है।

080

अत:, पुराने नियम में जब “पिता” कहा जाता है, तो संकेत सम्पूर्ण त्रिएकत्व की ओर है, न कि केवल एक व्यक्ति की ओर। अब, कुछ अर्थों में, “पिता” शब्द का प्रयोग पिता के व्यक्तित्व पर बल देता है। परन्तु यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि परमेश्वर के तीन व्यक्तियों के नये नियम के स्पष्ट प्रकाशन से पूर्व, परमेश्वर के लिए प्रयुक्त सारे शब्द, “पिता” शब्द सहित, कुछ हद तक सम्पूर्ण त्रिएकत्व पर लागू होता था। व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 पद 6, और यशायाह अध्याय 63 पद 16 और अध्याय 64 पद 8 जैसे पद्यांशों में “पिता” शब्द सम्पूर्ण परमेश्वरत्व को बताता है। समझाने के लिए, हम पुराने नियम में “पिता” शब्द के प्रयोग के एक उदाहरण को देखेंगे। मलाकी अध्याय 2 पद 10 में, भविष्यद्वक्ता ये सवाल पूछता है:

081

क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं? क्या एक ही परमेश्वर ने हम को उत्पन्न नहीं किया? (मलाकी 2:10)

082

यहाँ सम्पूर्ण परमेश्वरत्व - पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा सहित - को “पिता” कहा गया है क्योंकि सम्पूर्ण त्रिएकत्व ने मानवता की सृष्टि में भाग लिया। नया नियम इसे स्पष्ट करता है कि पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा प्रत्येक ने एक अलग भूमिका निभाई। परन्तु पुराने नियम का यह पद्यांश परमेश्वरत्व के व्यक्तियों को इस तरह अलग-अलग नहीं बताता है। इसके विपरीत, यह सृष्टि में तीनों व्यक्तियों की भूमिका के कारण सामूहिक रूप से “पिता” शब्द का प्रयोग करता है।

083

मामले को कठिन बनाने के लिए, चूँकि नये नियम के लेखकों ने पुराने नियम से लिया, तो ऐसे समय भी हैं जब उन्होंने भी सम्पूर्ण त्रिएकत्व को पिता के सामान्य अर्थ में संबोधित किया। उदाहरण के लिए, ऐसा प्रतीत होता है कि मत्ती अध्याय 5 पद 45 और अध्याय 6 पद 6 से 18, और प्रेरितों के काम अध्याय 17 पद 24 से 29 में सम्पूर्ण त्रिएकत्व को “पिता” के रूप में वर्णित किया गया है। इन पद्यांशों में, सम्पूर्ण त्रिएकत्व को कई कारणों से “पिता” कहा गया है। कई बार इसलिए कि सम्पूर्ण परमेश्वरत्व ने संसार की सृष्टि में भाग लिया। दूसरे समयों पर इसलिए कि परमेश्वर के तीनों व्यक्ति वह नैतिक प्रमाप हैं जिनके अनुसार हमें जीना है। फिर से, समझाने के लिए हम केवल एक पद को देखें। याकूब अध्याय 1 पद 17 में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

084

हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है। (याकूब 1:17)

085

इस पद से पहले, याकूब कहता है कि परमेश्वर का चरित्र नैतिक रूप से शुद्ध है। अत:, यहाँ उसका मतलब था कि परमेश्वर से जो कुछ आता है वह अच्छा है, और जो कुछ अच्छा है वह परमेश्वर की ओर है। चूँकि अच्छी वस्तुएँ हमारे त्रिएक परमेश्वर के सभी व्यक्तियों की ओर से आती हैं, इसलिए मसीही व्याख्याकार इसे अक्सर सम्पूर्ण त्रिएकत्व की ओर संकेत के रूप में देखते हैं। फिर से, पुराने नियम के समान, यहाँ पिता के व्यक्तित्व पर बल को देखना तार्किक है। परन्तु यह पुष्टि करना महत्वपूर्ण है कि पुत्र और पवित्र आत्मा भी हमें अच्छे वरदान देते हैं।

086

लेकिन, यह भी स्पष्ट है कि पवित्र वचन “पिता” शब्द का प्रयोग त्रिएकत्व के एक ऐसे व्यक्ति के लिए भी करता है जो पुत्र और पवित्र आत्मा से अलग है। हम इसे यूहन्ना अध्याय 1 पद 14 और 18; यूहन्ना अध्याय 5 पद 17 से 26; गलातियों अध्याय 4 पद 6; 2 पतरस अध्याय 1 पद 17 में देखते हैं। एक बार फिर इस बिन्दु को समझाने के लिए आइए दो उदाहरणों को देखें। 2 यूहन्ना पद 9 में, इन शब्दों को लिखते समय प्रेरित पिता और पुत्र के बीच अन्तर करता है:

087

जो कोई... मसीह की शिक्षा में बना नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं: जो कोई उसकी शिक्षा में स्थिर रहता है, उसके पास पिता भी है, और पुत्र भी। (2 यूहन्ना 9)

088

और यूहन्ना अध्याय 14 पद 16 और 17 में, अपने प्रेरितों को यह आश्वासन देते समय यीशु पिता को आत्मा से अलग ठहराता है:

089

मैं पिता से विनती करूँगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे - सत्य का आत्मा। (यूहन्ना 14:16-17)

090

अब जबकि हम देख चुके हैं कि किस प्रकार “पिता” नाम का प्रयोग पवित्र वचन में सम्पूर्ण परमेश्वरत्व के साथ-साथ त्रिएकत्व के प्रथम व्यक्ति के लिए भी किया गया है, तो हम त्रिएकता के अन्य व्यक्तियों से अलग पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखने के लिए तैयार हैं।

091

व्यक्ति

पिता के पुत्र और पवित्र आत्मा से जुड़ाव का कई प्रकार से वर्णन किया जा सकता है। परन्तु धर्मविज्ञान के इतिहास में, त्रिएकता पर दो विशेष दृष्टिकोण सामने आए हैं। विशेषत:, इसके बारे में तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता और आर्थिक त्रिएकता के अर्थ में बात की जाती रही है। ये दोनों विधियाँ उसी त्रिएकता की बात करती हैं - पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा - परन्तु ये परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्तियों के बीच संबंध के विभिन्न पहलूओं पर बल देती हैं।

092

एक तरफ, जब हम परमेश्वर के अस्तित्व पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो आमतौर पर तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता के बारे में बात की जाती है। तत्वमीमांसा शब्द का अर्थ है अस्तित्व से संबंधित। अत: जब हम तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता की बात करते हैं, तो हम त्रिएकता को अस्तित्व या तत्व की दृष्टि से देखते हैं। हम इस बात को देखते हैं कि कैसे त्रिएकता के तीनों व्यक्ति एक-दूसरे से जुड़े हैं, और कैसे वे एक तत्व में साझी हैं।

093

तत्वमीमांसा के दृष्टिकोण से, परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति असीम, अनन्त और कभी न बदलने वाले हैं। और प्रत्येक में वही आवश्यक दिव्य गुण हैं, जैसे बुद्धि, सामर्थ, पवित्रता, न्याय, भलाई और सत्य।

094

दूसरी तरफ, हम आमतौर पर कहते हैं कि हम आर्थिक त्रिएकता के बारे में बात कर रहे हैं जब हम इस बात को देखते हैं कि परमेश्वर के व्यक्ति आपस में किस प्रकार व्यवहार करते हैं, और वे एक व्यक्ति के रूप में किस प्रकार एक-दूसरे से संबंधित हैं। “आर्थिक” शब्द का अर्थ है “घर के प्रबन्ध से संबंधित।” अत:, जब हम त्रिएकता के आर्थिक पहलू की बात करते हैं, तो हम इस बात का वर्णन कर रहे हैं कि किस प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा अलग-अलग व्यक्तित्वों के रूप में एक-दूसरे से संबंधित हैं।

095

जब हम आर्थिक दृष्टि से त्रिएकता को देखते हैं, तो प्रत्येक व्यक्ति की अलग ज़िम्मेदारियाँ, अधिकार का एक अलग स्तर, और एक अलग निर्धारित भूमिका के साथ करने के लिए एक अलग कार्य है। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक-दूसरे से बातचीत करते हैं। वे एक-दूसरे के साथ अनुबंध करते हैं। वे एक-दूसरे के लिए कार्य करते हैं। और वे दूसरे कई तरीकों से व्यवहार करते हैं।

096

तत्वमीमांसा और आर्थिक दोनों दृष्टिकोणों से, पिता को प्रथम व्यक्ति कहा जाता है। पिता को तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता का प्रथम व्यक्ति कहा जाता है क्योंकि पुत्र पिता के द्वारा है, और पवित्र आत्मा पिता से आता है।

097

देखें 1 यूहन्ना अध्याय 4 पद 9 पुत्र की उत्पत्ति के बारे में क्या कहता है:

098

जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उसके द्वारा जीवन पाएँ। (1 यूहन्ना 4:9)

099

“एकलौता” शब्द यूनानी भाषा के शब्द मोनोजीनस से आता है। दुर्भाग्यवश, आरम्भिक कलीसिया में कुछ लोगों ने सोचा कि इसका अर्थ है कि पुत्र सृष्टि है और पूरी तरह दिव्य नहीं है। आज भी कई गलत सम्प्रदाय पुत्र की दिव्यता का इनकार करते हैं क्योंकि वह “एकलौता” कहलाता है।

100

इस गलत शिक्षा के उत्तर में, पारम्परिक रूप से मसीहियों ने कहा है कि पुत्र अनन्तकाल से पिता के साथ है या अनन्तकाल से पिता का एकलौता है। ये शब्द इस बात पर बल देते हैं कि ऐसा कोई समय नहीं था जब पुत्र विद्यमान नहीं था। सुनें किस प्रकार यीशु यूहन्ना अध्याय 15 पद 26 में पवित्र आत्मा के आगमन के बारे में कहता है:

101

परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा। (यूहन्ना 15:26)

102

“निकलता है” शब्द यूनानी शब्द एकपोरियूमाई का अनुवाद है, और इसे अक्सर “आता है” के रूप में अनुवादित किया जाता है। पारम्परिक रूप से इस शब्द को पवित्र आत्मा के अस्तित्व के स्रोत के संकेत के रूप में समझा जाता रहा है।

103

दुर्भाग्यवश, ऐसे पद्यांशों के कारण कुछ लोगों ने गलत निष्कर्ष निकाल लिए हैं कि पवित्र आत्मा अनन्त या पूर्णतः दिव्य नहीं है। इस कारण पारम्परिक मसीही धर्मविज्ञान इस बात पर जोर देने के प्रति सावधान रहा है कि पवित्र आत्मा त्रिएकता का पूर्ण सदस्य है, और वह पूर्णत: दिव्य है, यद्यपि उसका व्यक्तित्व अनन्त रूप में पिता से आता है।

104

तत्वमीमांसा संबंधी त्रिएकता का प्रथम व्यक्ति होने के अतिरिक्त, पिता आर्थिक त्रिएकता का भी प्रथम व्यक्ति कहलाता है। आर्थिक दृष्टिकोण से, पिता को “प्रथम व्यक्ति” कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार घर में मानवीय पिता का अधिकार होता है उसी प्रकार पिता का दूसरे दो व्यक्तियों पर अधिकार है।

105

हम पुत्र के ऊपर पिता के अधिकार को कई प्रकार से देख सकते हैं। जैसे, पुत्र पिता की इच्छा को पूरा करता है, जैसा हम यूहन्ना अध्याय 6 पद 40 में देखते हैं। और इफ़िसियों अध्याय 1 पद 20 से 22 जैसे पद्यांशों के अनुसार पुत्र को अधिकार और राज्य पिता से मिलता है। वास्तव में, पवित्र वचन हमें बार-बार बताता है कि पुत्र का राज्य पिता के राज्य के अधीन है। इसे हम बार-बार इस विचार में देखते हैं कि यीशु के दाहिने बैठता है, यानी, परमेश्वर के सिंहासन की दाहिनी ओर, जैसा भजन 110 पद 1 और इब्रानियों अध्याय 1 पद 3 में लिखा है। परमेश्वर का दाहिना हाथ निश्चित रूप से सम्मान और सामर्थ का स्थान है, परन्तु यह स्वयं सिंहासन नहीं है। और अन्त में, पुत्र अपना राज्य पिता को फेर देगा, जैसा पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 24 में सिखाता है। सारांश में, आर्थिक त्रिएकता में, पिता का पुत्र के ऊपर अधिकार है।

106

पिता और पुत्र के बीच संबंध और सम्पूर्ण अधिकार के प्रयोग का सवाल जटिल है। परन्तु, यह वास्तव में पिता और पुत्र की अलग-अलग भूमिकाओं से संबंधित है जिन्हें वे त्रिएकता में निभाते हैं। और यह तथ्य कि अपनी भूमिका में पुत्र स्वेच्छा से पिता के अधीन है। वह पिता की इच्छा के लिए अपने आपको समर्पित करने हेतु पृथ्वी पर आया और पिता सारे अधिकार का प्रयोग करता है। परन्तु साथ ही ये प्रेम के संबंध हैं जिसमें पिता पुत्र से प्रेम करता है और पुत्र पिता से प्रेम करता है, और वे त्रिएकता में एक-दूसरे को प्रसन्न करने और सम्मान देने की कोशिश करते हैं। अत:, हमें उनकी भूमिकाओं के बीच अन्तर को और उनके प्रेम को संबंध को थोड़ा खोलना होगा। (डॉ. साइमन वाइबर्ट)

107

इसी प्रकार, पिता को पवित्र आत्मा पर अधिकार है। उदाहरण के लिए, हमें अक्सर बताया जाता है कि पिता आत्मा को भेजता है, जैसा लूका अध्याय 11 पद 13 और इफ़िसियों अध्याय 1 पद 17 में लिखा है। हम प्रेरितों के काम अध्याय 10 पद 38 में यह भी सीखते हैं कि पिता ने ही पुत्र को आत्मा का सामर्थ दिया। पूरे पवित्र वचन में, पवित्र आत्मा संसार में पिता का प्रतिनिधि है, जो पिता से निर्देश पाकर उसकी इच्छा को पूरा करता है। आर्थिक त्रिएकता में, पिता का पवित्र आत्मा पर वैसा ही अधिकार है, जैसा उसका पुत्र पर अधिकार है।

108

पिता का अधिकार सर्वदा एक प्रेम का अधिकार है। पिता का अधिकार एक ऐसा अधिकार है जो पुत्र से प्रेम करता है, चाहता है कि पुत्र की महिमा हो, ठीक उसी प्रकार जैसे पुत्र भी पिता की महिमा चाहता है। और अन्ततः, यदि पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा में प्रेम का दिल है, तो पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा की इच्छाओं के बीच असहमति होने का विचार इस अर्थ में एक प्रकार से नाटकीय बन जाता है क्योंकि यदि पुत्र अनन्त रूप से और आत्मा अनन्त रूप से पिता की इच्छा को पूरा करना चाहते हैं और पिता अनन्त रूप से पुत्र और पवित्र आत्मा की महिमा करना और आदर देना चाहता है तो त्रिएकता की इस संगति में अस्तित्व की सर्वसम्मति के कारण, अवश्य ही परमेश्वर के जीवन में इच्छा की सर्वसम्मति, प्रेम की एक सर्वसम्मति है।

109

डॉ. स्टीव ब्लेकमोर

इस समझ के साथ कि पवित्र वचन में “पिता” शब्द और उसके व्यक्तित्व का किस तरह से प्रयोग हुआ है, हम सृष्टि और मानवता के ऊपर उसके पितृत्व की प्रकृति को देखने के लिए तैयार हैं।

110

पितृत्व

परमेश्वर के पितृत्व का विस्तार से वर्णन करने से पूर्व, हमें यह बताने के लिए रुकना चाहिए कि परमेश्वर के पितृत्व के बारे में बात करने वाले अधिकांश वचन पुराने नियम से आते हैं, परमेश्वर द्वारा अपनी त्रिएक प्रकृति को स्पष्ट रूप में प्रकट करने से पूर्व के हैं। इन पद्यांशों में, “पिता” शब्द सबसे पहले सम्पूर्ण त्रिएकत्व को बताता है, न कि केवल पिता को।

111

लेकिन, नया नियम परमेश्वर के पितृत्व को प्राथमिक रूप से पिता के व्यक्तित्व से जोड़ता है। इसलिए, इन पुराने नियम के पद्यांशों में पिता के व्यक्तित्व पर बल को देखना वैध है।

112

परमेश्वर के पितृत्व के बहुत से पहलू हैं जिन पर हम विचार कर सकते हैं। परन्तु हम पवित्र वचन के तीन सबसे मुख्य विचारों पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। पहला, हम सृष्टिकर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखेंगे। दूसरा, हम सृष्टि और लोगों पर राजा के रूप में परमेश्वर के स्थान के अर्थ में उसके पितृत्व को देखेंगे। और तीसरा, हम इस विचार पर ध्यान केन्द्रित करेंगे कि परमेश्वर अपने लोगों का मुखिया है। हम उसके पितृत्व के पहलू के रूप में सृष्टिकर्ता की उसकी भूमिका के अनुसंधान के साथ शुरू करेंगे।

113

सृष्टिकर्ता

वृहद् अर्थ में, पवित्र वचन कई बार परमेश्वर को सारी सृष्टि का पिता कहता है। उदाहरण के लिए, हम व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 पद 6, यशायाह अध्याय 43 पद 6 और 7, और अध्याय 64 पद 8, मलाकी अध्याय 2 पद 10, और लूका अध्याय 3 पद 38 जैसे पद्यांशों में पाते हैं।

114

एक उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम अध्याय 17 पद 26 से 28 में एथेने के लोगों से कहे गए पौलुस के वचनों को सुनें:

115

उसने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिए बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास की सीमाओं को बान्धा है... जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, कि हम तो उसी के वंश हैं। (प्रेरितों के काम 17:26-28)

116

यहाँ पौलुस अन्यजाति कवियों क्लिंथिस और अरेतुस को उद्धृत करता है, जिन्होंने कहा था कि ज्यूस मानवजाति का पिता है क्योंकि उसी ने उनको रचा था। निस्संदेह, पौलुस ने इस बात पर बल दिया कि वास्तविक सृष्टिकर्ता बाइबल का परमेश्वर था, न कि ज्यूस। परन्तु पौलुस ने इस विचार की पुष्टि की कि किसी को रचने का अर्थ है उसका पिता बनना।

117

बाइबल को मानवीय भाषा में लिखा गया था। सृष्टिकर्ता परमेश्वर के साथ हमारे मानवीय संबंध को अक्सर एक पिता और उसके बच्चों के बीच संबंध के अर्थ में अभिव्यक्त किया जाता है। इस सन्दर्भ में, परमेश्वर का पितृत्व हमारी उत्पत्ति और उसके अधिकार का प्रतिनिधित्व करता है।

118

डॉ. पाँल चाँग

जिस प्रकार मानवीय पिता अपने बच्चों के प्रति धैर्यवान होते हैं, सृष्टि पर परमेश्वर का सामान्य पितृत्व उसे हमारे पापी संसार के प्रति बड़ा धीरज दिखाने के लिए प्रेरित करता है, विशेषत: पापी मानवता के प्रति। इसका यह मतलब नहीं है कि वह सृष्टि से सर्वदा न्याय को रोके रहेगा। परन्तु वह इस बात को समझने में सहायता करता है कि वह क्रोध में धीमा और दया दिखाने में तीव्र क्यों है। जैसा हम भजन 145 पद 8 और 9 में पढ़ते हैं:

119

यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला और अति करुणामय है। यहोवा सभों के लिए भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है। (भजन 145:8-9)

120

सृष्टिकर्ता के रूप में परमेश्वर की भूमिका को देखने के बाद, अब हम यह देखने के लिए तैयार हैं कि राजा के रूप में उसकी भूमिका उसके पितृत्व से किस प्रकार संबंधित है।

121

राजा

प्राचीन पूर्वी देशों में, साधारण लोगों द्वारा राजाओं को पिता के रूप में और राजाओं द्वारा अपनी प्रजा को बच्चों के रूप में संबोधित करना आम बात थी। यह भाषा पवित्र वचन में भी अक्सर प्रतिबिम्बित होती है। उदाहरण के लिए, इस्राएली दाऊद को अपना पिता कहते थे क्योंकि वह उनका राजा था। निस्संदेह, कुछ इस्राएली दाऊद के वंशज थे, अत: शाब्दिक अर्थ में दाऊद उनका पूर्वज था। परन्तु जब पूरा देश दाऊद को पिता कहता था, तो उनका मतलब था कि वह उनका राजा था। मरकुस अध्याय 11 पद 10 को देखें, जहाँ भीड़ इस प्रकार चिल्लाई:

122

हमारे पिता दाऊद का राज्य जो आ रहा है; धन्य है! (मरकुस 11:10)

123

यहाँ, इस्राएल के ऊपर दाऊद का पितृत्व स्पष्ट रूप से उसके राज्य से संबंधित है। इसी प्रकार, प्रेरितों के काम अध्याय 4 पद 25 और 26 में, कलीसिया ने इन शब्दों में परमेश्वर की स्तुति की:

124

तू ने पवित्र आत्मा के द्वारा अपने सेवक हमारे पिता दाऊद के मुख से कहा, कि अन्य जातियों ने हुल्लड़ क्यों मचाया? और देश के लोगों ने क्यों व्यर्थ बातें सोचीं? प्रभु और उसके मसीह के विरोध में पृथ्वी के राजा खड़े हुए, और हाकिम एक साथ इकट्ठे हो गए। (प्रेरितों के काम 4:25-26)

125

एक बार फिर, दाऊद को इस्राएल का पिता कहा गया क्योंकि वह यहोवा का अभिषिक्त व्यक्ति था, राजा जिसने यहोवा के सिंहासन पर बैठकर शत्रु जातियों के विरूद्ध युद्ध में इस्राएल की अगुवाई की। परन्तु प्राचीन लोग राजाओं को अपना पिता क्यों कहते थे?

126

प्राचीन संसार में राजा स्वयं को “पिता” कहते थे क्योंकि वे अपने आप को पितृमय चित्रित करते थे, यानी वे अपने लोगों का ध्यान रख रहे थे, उनकी ज़रूरतों को पूरा कर रहे थे, और उनकी सुरक्षा करते थे। अब, वास्तविकता में, इसमें से अधिकाँश केवल दिखावा था क्योंकि प्राचीन संसार के राजा, ज्यादातर, लोगों की सेवा करने की बजाय खुद की सेवा करते थे। परन्तु साथ ही, जब परमेश्वर ने स्वयं को इस्राएल पर प्रकट किया, उसने राजाओं के पिता होने के इस आम विचार का प्रयोग किया। और परमेश्वर का हमारा पिता होना, शाही पिता, राजकीय पिता होना कोई दिखावे के अन्तर्गत नहीं है, यह सच्चाई है। परमेश्वर हमारा ध्यान रखता है। वह हमारे लिए प्रबन्ध करता है। वह एक पिता के समान हमारी रक्षा करता है। अत: वह अपने सम्पूर्ण साम्राज्य, पूरे राज्य का पिता है। (डॉ. रिचर्ड प्रैट, जूनियर)

127

और जिस प्रकार मानवीय राजा अपने राज्यों के पिता कहलाते थे, उसी प्रकार परमेश्वर को “पिता” कहा गया क्योंकि वह महान राजा था जो संसार के सारे राजाओं पर राज करता था, और इस कारण कि वह प्रत्यक्ष रूप में अपनी चुनी हुई जाति इस्राएल पर राज करता था।

128

सुनें यशायाह अध्याय 63 पद 15 और 16 यहोवा के पितृत्व के बारे में क्या कहता है:

129

स्वर्ग से, जो तेरा पवित्र और महिमापूर्ण वासस्थान है, दृष्टि कर। तेरी जलन और पराक्रम कहाँ रहे? तेरी दया और करुणा मुझ पर से हट गई हैं। निश्चय तू हमारा पिता है... हे यहोवा, तू हमारा पिता और हमारा छुड़ाने वाला है; प्राचीनकाल से यही तेरा नाम है। (यशायाह 63:15-16)

130

यहाँ, परमेश्वर को पिता कहा गया है क्योंकि वह स्वर्गीय सिंहासन पर बैठा है, सामान्य रूप से पूरी सृष्टि पर, और विशेष रूप में इस्राएल और यहूदा पर शासन करता है। विशेषत:, विनती दिव्य राजा से है कि वह युद्ध में अपनी सेना की अगुवाई करे, शत्रुओं को पराजित करके अपने लोगों को छुटकारा दे।

131

इस बात को जानने से हमें अत्यधिक भरोसा और सांत्वना मिलनी चाहिए कि हमारा दिव्य पिता उसी प्रकार हमारी देखभाल करता है जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों की देखभाल करता है। अपने बल पर, हम इस संसार की बुराइयों के विरूद्ध खड़े नहीं रह सकते हैं। परन्तु हमारा दिव्य राजा एक पिता के समान हमसे प्रेम करता है, और हमारी सहायता के लिए तत्पर रहता है।

132

वास्तव में, यीशु ने इस विचार को प्रभु की प्रार्थना में सिखाया था जब उसने अपने चेलों से इस प्रकार प्रार्थना करने को कहा “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है।” प्रभु की प्रार्थना की इस विनती में, परमेश्वर को हमारे स्वर्गीय पिता के रूप में अंगीकार किया गया है। और पूरी बाइबल में, स्वर्ग की तस्वीर एक समान है: यह परमेश्वर का सिंहासन है, वह स्थान जहाँ बैठकर वह राजा के रूप में शासन करता है। अत:, जब यीशु ने अपने चेलों से प्रार्थना करने को कहा, “हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है,” उसका मतलब था कि वे अपने शाही पिता के रूप में प्रार्थना करें जो स्वर्ग में दिव्य राजा के रूप में अपने सिंहासन पर विराजमान है। हमारा भरोसा कि परमेश्वर हमें रोज की रोटी देगा, हमारे पापों को क्षमा करेगा, हमें परीक्षा में न डालेगा, और हमें बुराई से बचाएगा, इस तथ्य पर आधारित है कि हमारे प्रेमी राजा के रूप में, उसके पास इन कार्यों को करने की सामर्थ और इच्छा दोनों है।

133

सृष्टिकर्ता और राजा के रूप में परमेश्वर की समझ को ध्यान में रखते हुए, हम उसके पितृत्व के एक पहलू के रूप में परिवार के मुखिया की उसकी भूमिका को देखने के लिए तैयार हैं।

134

मुखिया

मेरे लिए एक रुचिकर बात यह है कि धर्मविज्ञान के सर्वदा पासबानी अर्थ होते हैं। जैसा हमारा विश्वास होता है हम उसी प्रकार के लोग बनते हैं, और पिता परमेश्वर के संबंध में यह सच है। मैं सोचता हूँ यह दोनों तरफ कार्य करता है-उनके लिए जिनके पिता अच्छे थे, और उनके लिए जिनके पिता अच्छे नहीं थे। मैं इस बात में भाग्यशाली हूँ कि मेरे पिता अच्छे थे, इस कारण मेरे लिए परमेश्वर को अपने स्वर्गीय पिता के रूप में देखना कभी मुश्किल नहीं रहा। जो कुछ मेरे पिता ने मुझ से कहा, और मेरे लिए किया, और जिस प्रकार हम एक-दूसरे से संबंधित थे - वह बहुत, बहुत महत्वपूर्ण था, और पिता परमेश्वर को मेरे लिए एक बहुत ही सकारात्मक अर्थ में लाता है। परन्तु वर्षों के दौरान मैं ऐसे लोगों से मिला हूँ और उनके साथ काम किया है जिनके लिए पितृत्व की भाषा बहुत नकारात्मक, बहुत चुनौतीपूर्ण, बहुत मुश्किल थी। परन्तु मुझे याद है एक दिन मेरी एक छात्रा ने इसे मेरे सामने कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया, उसने कहा कि “परमेश्वर मेरे लिए एक ऐसा पिता बना जो मेरे पास कभी नहीं था।” और, इसलिए मैं सोचता हूँ कि जब हम अभाव के स्थान से भी परमेश्वर के पितृत्व का अनुसंधान करते हैं, तो चाहे अपने सांसारिक पिता के साथ हमारा वास्तविक अनुभव वैसा रहा हो या नहीं, हमें पता चलता है कि परमेश्वर का हृदय एक ऐसा हृदय है जो हमारे प्रति खुला है।

135

डॉ. स्टीव हार्पर

हर कोई परिवार के मुखिया के विचार से परिचित है। आमतौर पर यह माता-पिता, दादा-दादी, या रिश्तेदारों में से कोई एक होता है जो परिवार या घर के लिए निर्णय लेता है। पवित्र वचन अक्सर अपने लोगों के साथ परमेश्वर के रिश्ते को इन्हीं अर्थों में बताता है।

136

पुराने नियम में कभी-कभी, हमें परमेश्वर की मानवजाति के परिवार का मुखिया होने की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 5 पद 1 से 3 में, मूसा ने आदम के साथ परमेश्वर के संबंध का वर्णन उसी प्रकार किया जिस प्रकार उसने आदम का उसके पुत्र, शेत के साथ संबंध का वर्णन किया।

137

पुराने नियम में कई बार, परमेश्वर को इस्राएल जाति के मुखिया के रूप में चित्रित किया गया है। हम इसे व्यवस्थाविवरण अध्याय 1 पद 31, भजन 103 पद 13, और नीतिवचन अध्याय 3 पद 12 जैसे स्थानों पर लोगों के प्रति उसकी चिन्ता में देखते हैं। एक उदाहरण के रूप में, होशे अध्याय 11 पद 1 में यहोवा के वचनों को देखें:

138

जब इस्राएल बालक था, तब मैं ने उस से प्रेम किया, और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। (होशे 11:1)

139

यहाँ पर यहोवा अपने आप को एक अभिभावक के रूप में चित्रित करता है जिसने बचपन से इस्राएल जाति से प्रेम किया था। हम गिनती अध्याय 12 पद 7 में भी इस्राएल के मुखिया के रूप में परमेश्वर का वर्णन देखते हैं, जहाँ परमेश्वर ने मूसा के बारे में कहा:

140

मेरा दास मूसा; वह तो मेरे सब घरानों में विश्वासयोग्य है। (गिनती 12:7)

141

“घर” शब्द इब्रानी भाषा के बेइत से लिया गया है। यह एक सामान्य शब्द है जो न केवल एक मकान को, बल्कि उसमें रहने वाले लोगों को भी बताता है। यहाँ, मूसा को एक पुत्र या सेवक के रूप में बताया गया है जो घर के मुखिया के परिजनों और सम्पत्ति पर शासन करता है, इसका अर्थ है कि परमेश्वर इस्राएल जाति का मुखिया है।

142

निस्संदेह, परिवार के मुखिया के रूप में परमेश्वर का वर्णन नये नियम में भी है। मत्ती अध्याय 7 पद 9 से 11, और लूका अध्याय 11 पद 11 से 13 में, यीशु ने सिखाया कि पिता हमारी प्रार्थनाओं को उसी प्रकार उत्तर देता है जिस प्रकार मानवीय पिता अपनी सन्तानों की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यूहन्ना अध्याय 1 पद 12 और 13 में, तथा 1 यूहन्ना अध्याय 2 पद 29 और अध्याय 3 पद 1 में, हम सीखते हैं कि पिता हम से प्रेम करता है क्योंकि हम ने उसके परिवार में जन्म लिया है। और इब्रानियों अध्याय 12 पद 5 से 10 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर हमारी भलाई के लिए एक मानवीय पिता के समान हमारी ताड़ना करता है। और 1 तीमुथियुस अध्याय 3 पद 15 और 1 पतरस अध्याय 4 पद 17 जैसे पद्यांशों में, कलीसिया को परमेश्वर का घराना और परिवार कहा गया है।

143

मेरा विश्वास है कि परमेश्वर के पितृत्व के अद्भुत पासबानी अर्थ हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात जो हम देखते हैं: परमेश्वर पिता है। मेरा मतलब है, यह एक अद्भुत दृश्य है कि पवित्र वचन में पिता कैसा है, परमेश्वर कैसा है। अत:, शुरूआत से ही हम देखते हैं कि परमेश्वर के लिए परिवार बहुत महत्वपूर्ण है। और मेरा विश्वास है कि व्यवस्थाविवरण 6 से जहाँ यहोवा कहता है, “सुन, मैं इसी प्रकार व्यवस्था और परमेश्वर के प्रेम को स्थिर करूँगा; यह परिवारों के द्वारा होगा।” जब अभिभावकों के कन्धे, उनका जीवन बच्चों के जीवन से रगड़ खाता है, तो वहाँ स्पष्टत: अद्भुत बातें होती हैं। परिवार परमेश्वर के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। मैं सोचता हूँ आप नीचे देखें और आप देखेंगे कि पिता भी परिवार के लिए महत्वपूर्ण हैं। और पासबानी मतलब, आप पूरे संसार में देख सकते हैं जहाँ पिता मजबूत हैं, वहाँ संस्कृति भी मजबूत है। जहाँ संस्कृतियों में पिता कमजोर हो जाते हैं, संस्कृतियों के अन्दर कमजोर हो जाते हैं, वहाँ की चाल कमजोर हो जाती है जिसे केवल मातृत्व से नहीं बदला जा सकता है। हमें मजबूत माताओं की आवश्यकता है, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु पिता अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं, और मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर के पितृत्व में एक बात जो हम देखते हैं वह यह कि यह बहुत सक्रिय है। मैं देखता हूँ कि जब पितृत्व का अभाव होता है तो आपके साथ दुर्व्यवहार में वृद्धि होती है, आपके पास शिक्षा का अभाव होता है, अपराध बढ़ जाते हैं। और संस्कृतियों में यह गड़बड़ तब होती है जब पितृत्व के बारे में आपकी अवधारणा कमजोर होती है और यह तब होगा जब परमेश्वर के पिता होने की आपकी अवधारणा कमजोर है।

144

डॉ. मैट फ्रीडमैन

अब सर्वसामर्थी पिता के नाम, व्यक्तित्व और पितृत्व को देखने के बाद, हम अपनी इच्छा को पूरी करने की उसकी असीम सामर्थ को जाँचने के लिए तैयार हैं।

145

सामर्थ

एक बार फिर प्रेरितों के विश्वास-वचन में विश्वास के पहले सूत्र को देखें। यह कहता है:

146

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर में विश्वास करता हूँ,   
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

147

जब प्रेरितों का विश्वास-वचन कहता है कि पिता परमेश्वर सर्वसामर्थी है, तो इसका मतलब है कि उसकी सामर्थ असीम, अतुल्य है। पारम्परिक धर्मविज्ञानी शब्दों में, सर्वसामर्थ कहा जाता है, जिसका मूल शब्द है ओमनी यानी सब, और पोटेन्सी यानी सामर्थ।

148

पिता की सामर्थ असीम है क्योंकि वह जो कुछ चाहता है उसे पूरा करने की ताकत और योग्यता उसमें है। और यह अतुल्य है क्योंकि इस प्रकार की सामर्थ केवल उसी के पास है।

149

हम पिता की सामर्थ के दोनों पहलूओं को देखेंगे जिनका हमने अभी वर्णन किया है: यह तथ्य कि यह असीम है, और तथ्य कि यह अतुल्य है। आइए उसकी सामर्थ की असीम प्रकृति से शुरू करें।

150

असीम

पवित्र वचन बताता है कि पिता जो कुछ चाहता है उसे पूरा करने की सामर्थ उसके पास है। और यह इस असीम सामर्थ को कई विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित करता है। यह बताता है कि उसमें ब्रह्माण्ड को रचने और नाश करने की सामर्थ है। यह बताता है कि उस में मौसम को नियन्त्रित करने, युद्ध में अपने शत्रुओं को हराने, मानवीय सरकारों पर शासन करने और उन पर नियन्त्रण करने, सामर्थी आश्चर्यकर्म करने, और अपने लोगों को बचाने की सामर्थ है। देखें कि यिर्मयाह अध्याय 10 पद 10 से 16 में यिर्मयाह नबी किस प्रकार यहोवा का वर्णन करता है:

151

यहोवा वास्तव में परमेश्वर है; जीवित परमेश्वर और सदा का राजा वही है। उसके प्रकोप से पृथ्वी कांपती है, और जाति जाति के लोग उसके क्रोध को सह नहीं सकते।... उसी ने पृथ्वी को अपनी सामर्थ से बनाया, उस ने जगत को अपनी बुद्धि से स्थिर किया, और आकाश को अपनी प्रवीणता से तान दिया है। जब वह बोलता है तब आकाश में जल का बड़ा शब्द होता है, और पृथ्वी की छोर से वह कुहरे को उठाता है। वह वर्षा के लिए बिजली को चमकाता, और अपने भण्डार में से पवन चलाता है।... वह तो सब का सृजनहार है, और इस्राएल उसके निज भाग का गोत्र है; सेनाओं का यहोवा उसका नाम है। (यिर्मयाह 10:10-16)

152

अन्तिम रूप से इस रचे हुए संसार के प्रत्येक पहलू पर परमेश्वर ही नियन्त्रण करता है। वह जो कुछ चाहता है उसे करने की सामर्थ उसके पास है। यशायाह अध्याय 46 पद 10 और 11 में, यहोवा स्वयं संक्षेप में अपनी सामर्थ को इस प्रकार बताता है:

153

मेरी युक्ति स्थिर रहेगी और मैं अपनी इच्छा को पूरी करुंगा।... मैं ही ने यह बात कही है और उसे पूरी भी करूँगा; मैं ने यह विचार बान्धा है और उसे सफल भी करूँगा। (यशायाह 46:10-11)

154

परमेश्वर की सर्वसामर्थ विश्वासियों के रूप में हमारे लिए एक अच्छी यादगार है कि जब संसार नियन्त्रण से बाहर होता प्रतीत होता है, जब यह अव्यवस्था में गिरता प्रतीत होता है, तो ऐसा नहीं है। परमेश्वर को उस से बड़े किसी स्रोत या सामर्थ से बान्धा नहीं जा सकता है। संसार, चाहे यह कैसा भी प्रतीत हो, संसार नियन्त्रण से बाहर नहीं जा रहा है, परमेश्वर सर्वोच्च है, हम भरोसा कर सकते हैं कि वह हारा हुआ नहीं है, और यह ऐसे समयों में हमें विश्वास के साथ चलने की सामर्थ देता है जो हमारे सीमित दृष्टिकोण में हमें रहस्यमयी प्रतीत होते हैं। जब हमें वह सब दिखाई नहीं देता है जिसे परमेश्वर देखता है, तो यह जानना अच्छा है कि परमेश्वर का नियन्त्रण और उसकी सामर्थ उसकी इच्छा के विरूद्ध उसके हाथ से निकल नहीं गए हैं। जो कुछ मेरे पास आ रहा है, जो कुछ मेरे जीवन में हो रहा है, वह परमेश्वर के प्रेमी हाथ के अधिकार के अन्तर्गत हो रहा है। और मैं उस समय भी भरोसा कर सकता हूँ जब मैं अपनी परिस्थितियों को समझ न पाऊँ, कि मैं जानता हूँ कि मुझे स्थिर रखने वाला परमेश्वर इसके बीच में मेरे साथ चल रहा है।

155

डॉ. राँबर्ट जी. लिस्टर

बाइबल में, पवित्र वचन आमतौर पर परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के छुटकारे को उसकी सामर्थ के आदर्श प्रदर्शन के रूप में इंगित करता है। पुराने नियम में, हम बार-बार पढ़ते हैं कि निर्गमन में उसने अपनी सामर्थ को साबित किया जब उसने मिस्रियों पर विपत्तियों को भेजा, इस्राएलियों को बँधुआई से मुक्त किया, मरुभूमि में चालीस वर्ष तक उन्हें स्वर्ग का भोजन देकर चलाया, और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश पर विजय प्रदान की। प्राचीन इस्राएल के मन में, निर्गमन परमेश्वर की छुटकारा देने वाली सामर्थ का सर्वोत्तम उदाहरण था जिसे वे जानते थे।

156

हम निर्गमन अध्याय 14 पद 31; गिनती अध्याय 14 पद 13; और व्यवस्थाविवरण अध्याय 9 पद 26 से 29 जैसे पद्यांशों में, पूरी व्यवस्था की पुस्तकों के दौरान निर्गमन में परमेश्वर की सामर्थ के उद्धरण को देखते हैं। हम इस विषय को पुराने नियम हर दूसरे हिस्से में देखते हैं। हम इस ऐतिहासिक पुस्तकों में 2 राजा अध्याय 17 पद 36 में पाते हैं; काव्यात्मक पुस्तकों में भजन 66 पद 3 से 6 में; और भविष्यद्वाणी की पुस्तकों में यशायाह अध्याय 63 पद 12 जैसे स्थानों पर पाते हैं।

157

अब, ऐसा नहीं है कि प्राचीन इस्राएलियों ने अनुग्रह के द्वारा विश्वास से यहोवा में प्राप्त आत्मिक छुटकारे की अगम्य महानता को अनदेखा किया। उनके लिए इस प्रकार की बातों कहना बिल्कुल वैध था जैसे, “मैं विश्वास से परमेश्वर की सामर्थ में भरोसा करता हूँ।” परन्तु बहुत से पुराने नियम के लेखकों ने इस प्रकार की बातों को कहना ज्यादा जरूरी समझा कि, “परमेश्वर ने अकेले हमारी सम्पूर्ण जाति को दासत्व से मुक्त करके अपनी सामर्थ को साबित किया।” और इसमें कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। आखिर, निर्गमन में परमेश्वर की ताकत के बाहरी प्रदर्शन इतने वास्तविक थे कि अविश्वासी मिस्री भी क़ायल हो गए थे।

158

परमेश्वर की इस असीम सामर्थ की समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें इस बात को बताने के लिए रुकना चाहिए कि इस असीम सामर्थ के बावजूद कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर नहीं कर सकता या नहीं करेगा। विशेषत:, पिता की प्रकृति उसके द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का ध्यान रखती है। परिणामस्वरूप, वह कभी भी कुछ ऐसा नहीं करता जो उसकी प्रकृति के विरूद्ध हो।

159

प्रकृति एक विस्तृत शब्द है जिसमें आवश्यक एवं व्यक्तिगत दोनों गुण शामिल हैं। हम इसे व्यक्ति का मूलभूत चरित्र; या किसी के अस्तित्व के केन्द्रीय पहलू कह सकते हैं। पिता के संबंध में, उसकी प्रकृति में न केवल उसका अस्तित्व और उसका चरित्र शामिल है, बल्कि त्रिएकता के अन्य सदस्यों के साथ उसके संबंध भी शामिल हैं। और पिता की प्रकृति पूर्णत: निर्णायक एवं अपरिवर्तनीय है, इसलिए वह अपनी सामर्थ का समान रीतियों में प्रयोग करता है। याकूब अध्याय 1 पद 17 परमेश्वर की प्रकृति के अपरिवर्तनीय गुण के बारे में इस प्रकार बताता है:

160

...ज्योतियों का पिता...जिस में न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है। (याकूब 1:17)

161

पिता की प्रकृति उन कार्यों को करने की उसकी क्षमता को सीमित नहीं करती है जो उसकी प्रकृति के अनुरूप हैं। परन्तु यह निश्चित है कि वह अपनी सर्वोच्च सामर्थ का प्रयोग केवल उन्हीं रीतियों में करेगा जो उसके गुणों के अनुकूल हैं। उदाहरण के लिए, वह सर्वदा अनन्त रहेगा। वह पुत्र और पवित्र आत्मा के ऊपर अपने अधिकार को कभी नहीं छोड़ेगा। वह कभी कोई पाप नहीं करेगा। और वह सर्वदा अपने वायदों को पूरा करेगा।

162

यह मेरे लिए बहुत रुचिकर है कि आधुनिक विज्ञान की उन्नति में एक तत्व इस बात की पहचान करना था कि परमेश्वर आज उसी प्रकार कार्य करता है जैसे वह कल करता था। जबकि जहाँ कहीं इस संसार में आत्मा पूजा व्याप्त है - यह विश्वास कि बहुत सारे देवता हैं और देवता इस संसार के पदार्थों में वास करते हैं - उनका मानना है कि परमेश्वर के बारे में कोई भविष्यद्वाणी नहीं की जा सकती - और यदि यह सत्य है, तो आप इस संसार का अध्ययन नहीं कर सकते क्योंकि आप नहीं जानते कि जिस प्रकार यह आज कार्य कर रहा है उसी प्रकार कल करेगा या नहीं। परन्तु यदि परमेश्वर अपरिवर्तनीय है तो आप वास्तव में बाहर जा कर संसार का अध्ययन कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि परमेश्वर ने इसे कैसे बनाया और यह कैसे कार्य करता है। और परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता के विश्वास ने ही आधुनिक विज्ञान की उन्नति को संभव बनाया। जैसे इसने आधुनिक विज्ञान की उन्नति को संभव बनाया उसी प्रकार यह अनिश्चित परिस्थितियों में एक मसीही को भरोसा, सांत्वना और शान्ति देता है क्योंकि हमारे लिए इन सबको समझना जरूरी नहीं है। हमारे लिए यह जानना जरूरी नहीं है कि क्या हो रहा है। हमें केवल यह जानना है कि हमारा परमेश्वर किसी भी और हर चुनौती पर पार पाने के लिए पूर्णत पर्याप्त है जिसका हम सामना करते हैं, और वह उस परिस्थिति को उसी प्रकार संबोधित करेगा जिस प्रकार उस ने दाऊद, इब्राहीम और आदम और यीशु और पौलुस से वायदा किया - कि वह भरोसेमन्द है, वह विश्वासयोग्य है, वह चंचल नहीं है, वह हर दिन बदलता नहीं है, और उसके पास हमारी प्रत्येक परिस्थिति का सामना करने की सामर्थ है।

163

डॉ. जे. लिगोन डन्कन तृतीय

अब पिता की सामर्थ की असीम प्रकृति पर चर्चा करने के बाद, हमें उसके अतुल्य गुणों की ओर मुड़ना चाहिए, यह ध्यान रखते हुए कि केवल परमेश्वर ही सर्वसामर्थी है।

164

अतुल्य

देखें यशायाह अध्याय 14 पद 24 से 27 में परमेश्वर की अतुल्य सामर्थ का वर्णन किस प्रकार किया गया है:

165

सेनाओं के यहोवा ने यह शपथ खाई है, निस्सन्देह जैसा मैं ने ठाना है वैसा ही हो जाएगा, और जैसी मैं ने युक्ति की है, वैसी ही पूरी होगी, कि मैं अश्शूर को अपने ही देश में तोड़ दूँगा, और अपने पहाड़ों पर उसे कुचल डालूँगा; तब उसका जूआ उनकी गर्दनों पर से और उसका बोझ उनके कंधों पर से उतर जाएगा। यही युक्ति सारी पृथ्वी के लिए ठहराई गई है; और यह वही हाथ है जो सब जातियों पर बढ़ा हुआ है। क्योंकि सेनाओं के यहोवा ने युक्ति की है और कौन उसको टाल सकता है? उसका हाथ बढ़ाया गया है, उसे कौन रोक सकता है? (यशायाह 14:24-27)

166

ध्यान दें कि इस पद्यांश में, यहोवा की असीम सामर्थ के वर्णन के बाद यह पुष्टि है कि केवल वही सर्वसामर्थी है। ऐसा कोई नहीं जो उसे रोक सके, या उसके बढ़े हुए हाथ को मोड़ सके।

167

परमेश्वर की सामर्थ के अतुल्य होने का तथ्य स्वाभाविक रूप से इस तथ्य से बहता है कि सच्चा परमेश्वर केवल एक ही है। निश्चित रूप से, यदि अनन्त सामर्थ वाला कोई दूसरा अस्तित्व होता, तो एकमात्र परमेश्वर होने के परमेश्वर के स्थान को चुनौती दी जा सकती थी। आखिर, अनन्त सामर्थ वाला अस्तित्व या तो दिव्य होता, या अपनी सामर्थ के द्वारा अपने आपको दिव्य बना सकता था।

168

अय्यूब अध्याय 38 में परमेश्वर ने अय्यूब से यही कहा, जब उसने कहा कि अय्यूब अपने आप को धर्मी ठहरा सकता है यदि वह उन सामर्थी कार्यों को कर सके जिसे परमेश्वर ने किया है जैसे सृष्टि की रचना, क्रम ठहराना और पूरे ब्रह्माण्ड पर नियन्त्रण करना।

169

परन्तु वास्तविकता यह है कि केवल परमेश्वर ही वास्तव में दिव्य है। और इसलिए केवल परमेश्वर के पास असीम सामर्थ है।

170

दुःखद रूप से, हमारे समय में बहुत से समझदार मसीही इस बात से इनकार करते हैं कि परमेश्वर सर्वसामर्थी है। उन्होंने यह गलत रूप में समझ लिया है कि पवित्र वचन सिखाता है कि स्वयं परमेश्वर अपनी सृष्टि के साथ जो कुछ वह कर सकता है कर रहा है। परन्तु परमेश्वर की सर्वसामर्थ पवित्र वचन की एक अद्भुत व्यवहारिक शिक्षा है। जब परमेश्वर के लोग समस्या में होते हैं, वे परमेश्वर की सहायता की दोहाई देते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वह बचा सकता है। जब ऐसा प्रतीत होता है कि बुराई संसार पर नियन्त्रण कर रही है, तो हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि परमेश्वर का बुराई पर पूर्ण नियन्त्रण है। परमेश्वर की सर्वसामर्थ में विश्वास के बिना, हमारे भरोसे का कोई आधार नहीं है कि परमेश्वर अपने शत्रुओं को हरा देगा, और उसके बच्चे उसके द्वारा प्रतिज्ञा की गई अनन्त आशीषों को प्राप्त करेंगे।

171

उस सारे धनी धर्मविज्ञान के बारे में सोचना अद्भुत है जो सर्वसामर्थी पिता शब्द में लिपटा है। हम एक सामर्थी, व्यक्तिगत, पितृमय परमेश्वर की सेवा करते हैं जो हम से प्रेम करता है और आश्चर्यजनक रीतियों से हमें संभालता है। और हम पूर्णत: सुनिश्चित हो सकते हैं कि उसकी सुरक्षा कभी असफल नहीं होगी क्योंकि हम जानते हैं कि वह स्वयं कभी असफल नहीं होगा। वह सर्वदा हमारा सृष्टिकर्ता, राजा और मुखिया रहेगा। उसकी सामर्थ हमेशा असीम, अतुल्य रहेगी। और वह कभी नहीं बदलेगा। वह सर्वदा हमें बचाने के लिए उपलब्ध रहेगा, और उसके द्वारा दिया जाने वाला उद्धार उसके समान ही अनन्त है।

172

इस अध्याय में अब तक हमने हमारे त्रिएक परमेश्वर की प्रकृति, और सर्वसामर्थी पिता के नाम से ज्ञात दिव्य व्यक्ति की विशेषताओं को देखा। इस बिन्दु पर, हम अपने तीसरे शीर्षक पर आने के लिए तैयार हैं: आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप में पिता की भूमिका।

173

कर्ता

आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप पिता के बारे में हमारी चर्चा उसके रचनात्मक कार्य के तीन पहलूओं पर केन्द्रित होगी। पहला, हम पिता के सृष्टि के कार्य को देखेंगे। दूसरा, हम सृष्टि की भलाई पर ध्यान केन्द्रित करेंगे। तीसरा, हम सृष्टि पर पिता के अधिकार का वर्णन करेंगे। आइए अब पिता द्वारा किए गए सृष्टि के कार्य को देखने के साथ शुरू करें।

174

सृष्टि का कार्य

इसके विश्वास का पहला सूत्र कहता है:

175

मैं सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ,   
जो आकाश और पृथ्वी का कर्ता है।

176

पवित्र वचन में पिता के बताए गए सारे कार्यों में, यही एक कार्य है जिस पर ऐतिहासिक मसीहियत ने बल दिया है और सारे मसीही जिसकी पुष्टि करते हैं।

177

अधिकाँश मसीही इस विचार से परिचित हैं कि परमेश्वर ब्रह्माण्ड को बनाया और उसे स्थिर रखता है, क्योंकि पवित्र वचन में अक्सर इसके बारे में बताया गया है। वास्तव में, यदि हम अपनी बाइबल का पहला पृष्ठ खोलें और पढ़ना शुरू करें, पहली बात जो हमें बताई जाती है वह यह कि परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का कर्ता है। जैसा हम उत्पत्ति अध्याय 1 पद 1 में सीखते हैं:

178

आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की। (उत्पत्ति 1:1)

179

इस परिचयात्मक पद के बाद, उत्पत्ति अध्याय 1 का शेष भाग बताता है कि परमेश्वर ने छह दिन में ब्रह्माण्ड को बनाया और स्थिर किया।

180

अब, कलीसिया के इतिहास के दौरान, उत्पत्ति अध्याय 1 के सृष्टि के अभिलेख की व्याख्या के बारे में बहुत सी अवधारणाएँ रही हैं। लगभग सभी धर्मविज्ञानी इस से सहमत हैं कि परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को शून्य में से बनाया। यानी, परमेश्वर द्वारा आकाश और पृथ्वी की सृष्टि से पहले, स्वयं परमेश्वर के अलावा और कुछ नहीं था। ऐसा कोई तत्व पहले से मौजूद नहीं था जिससे परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड की सृष्टि की। और कई लोग सुझाव देते हैं कि परमेश्वर ने समय और अन्तरिक्ष को भी बनाया।

181

परन्तु धर्मविज्ञानियों में अक्सर उस विधि के बारे में असहमति रही है जिसके द्वारा परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को बनाया, विशेषत: सृष्टि के छह दिनों की प्रकृति के बारे में। कई कलीसियाई अगुवे, जैसे क्लेमेन्ट, ओरिगन और अगस्टीन, मानते थे कि दिन सृष्टि के रूपकात्मक प्रतिनिधित्व थे जिसमें संभवत: एक क्षण ही लगा था। दूसरे, जैसे आइरेनियस और तर्तुलियन, उन्हें सामान्य 24-घण्टों वाले दिनों के रूप में देखते थे। बाद में, जब विज्ञान ने कहना शुरू किया कि ब्रह्माण्ड बहुत पुराना है, तो बहुत से धर्मविज्ञानी सृष्टि के अभिलेख को नये तरीकों से पढ़ने लगे। कुछ ने सुझाव दिया कि दिन तो सामान्य 24-घण्टों की अवधि के थे, परन्तु परमेश्वर द्वारा सृष्टि करने के इन दिनों के बीच अन्तराल बहुत बड़ा था। दूसरों ने दिनों की व्याख्या रूपकों के रूप में की जो युगों या कालों को बताते हैं।

182

निश्चित रूप से उत्पत्ति अध्याय 1 में सृष्टि के दिनों का मामला बहुत गरम है जो बहुत सारे वाद-विवादों का स्रोत रहा है। मैं सोचता हूँ एक मामला यह है: यह किस प्रकार का साहित्य है? क्या यह इस प्रकार का साहित्य है जो हमें इन्द्रियों से संबंधित तथ्यों को देने के लिए बनाया गया है, यह साहित्य हमें आत्मिक सत्य सिखाने के लिए बनाया गया है। अब, हमें इन दोनों के बीच दरार को बड़ा नहीं करना चाहिए। परमेश्वर इस संसार का सृष्टिकर्ता है और ये दोनों एक-दूसरे के अनुरूप होने चाहिए। परन्तु यदि हम उत्पत्ति अध्याय 1 को विज्ञान के लेख के रूप में पढ़ें तो यह हमें इसे सृष्टि की प्रकृति और अर्थ की चर्चा के रूप इसे पढ़ने की बजाय एक अलग व्याख्या की ओर ले जाएगा। (डॉ. जाँन ओस्वाल्ट)

183

आरम्भिक कलीसिया और उनके द्वारा प्रेरितों के विश्वास-वचन के प्रयोग में, जो सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रतीत होता है वह यह कि विश्वासी अंगीकार करते थे कि केवल परमेश्वर ने, पिता के व्यक्तित्व की अगुवाई में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बनाया और वही सारे आत्मिक और भौतिक क्षेत्रों सहित, उनके सारे तत्वों और प्राणियों के साथ उसे स्थिर रखता है।

184

यही वह विचार है जिस पर नहेमयाह अध्याय 9 पद 6 में लेवियों ने बल दिया। उनके शब्दों को सुनें:

185

तू ही अकेला यहोवा है; स्वर्ग वरन सब से ऊँचे स्वर्ग और उसके सब गण, और पृथ्वी और जो कुछ उस में है, सभों को तू ही ने बनाया, और सभों की रक्षा तू ही करता है; और स्वर्ग की समस्त सेना तुझी को दण्डवत करती है। (नहेमयाह 9:6)

186

जैसे हम यहाँ पढ़ते हैं, केवल परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को बनाया। और केवल परमेश्वर ही सब कुछ जो विद्यमान है उसे जीवन देता है और अपने बनाए हुए ब्रह्माण्ड को स्थिर रखता है।

187

अब, यह बताना महत्वपूर्ण है कि यद्यपि आकाश और पृथ्वी को बनाने और स्थिर करने में पिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, इन कार्यों में सम्पूर्ण त्रिएकता विभिन्न रीतियों से शामिल है। उदाहरण के लिए, पुत्र वह माध्यम या उपकरण था जिसे पिता ने संसार को बनाने के लिए प्रयोग किया, और वह अब भी इसे स्थिर रखने के लिए उसका प्रयोग करता है।

188

देखें कि पौलुस 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 पद 6 में सृष्टि के कार्य का वर्णन कैसे करता है:

189

तौभी हमारे निकट तो एक ही परमेश्वर है: अर्थात् पिता जिस की ओर से सब वस्तुएँ हैं, और हम उसी के लिए हैं, और एक ही प्रभु है, अर्थात् यीशु मसीह जिस के द्वारा सब वस्तुएँ हुईं, और हम भी उसी के द्वारा हैं। (1 कुरिन्थियों 8:6)

190

यहाँ, पौलुस ने बताया कि पिता सृष्टि का स्रोत है। सृष्टि उस से है। परन्तु यह पुत्र के द्वारा है। हम इसलिए जीवित हैं क्योंकि पिता पुत्र के द्वारा हमारे जीवनों को स्थिर रखता है।

191

पवित्र वचन में पवित्र आत्मा की भागीदारी का स्पष्ट वर्णन नहीं है। प्राथमिक रूप से पुराने नियम के पद्यांश परमेश्वर के आत्मा के कार्य का संकेत देते हैं। पुराने नियम के समयों के दौरान, पवित्र आत्मा परमेश्वर के अलग व्यक्तित्व के रूप में स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं हुआ था। लेकिन, नया नियम सिखाता है कि वह संसार में परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए पहले से ही सक्रिय था। हम इसे मरकुस अध्याय 12 पद 36 जैसे पद्यांशों में देखते हैं जो बताते हैं कि पवित्र आत्मा ने पुराने नियम के लेखकों को प्रेरणा दी, और प्रेरितों के काम अध्याय 2 पद 2 से 17 में, जहाँ पतरस ने सिखाया कि पुराने नियम के समय में भी भविष्यद्वाणी और आत्मिक वरदानों का देने वाला पवित्र आत्मा था।

192

अत:, जब हम परमेश्वर के आत्मा के पुराने नियम के अभिलेखों को पढ़ते हैं, तो यह मानना तार्किक है कि वे बाद में दिव्य व्यक्ति के रूप में पवित्र आत्मा के स्पष्ट प्रकाशन की छाया हैं। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति अध्याय 1 पद 2 और 3 में हम पढ़ते हैं:

193

और पृथ्वी बेडौल और सुनसान पड़ी थी; और गहरे जल के ऊपर अन्धियारा था: तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था। तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया। (उत्पत्ति 1:2-3)

194

“परमेश्वर का आत्मा” शब्द शाब्दिक रूप में परमेश्वर के सारे व्यक्तित्वों को बताता है। परन्तु हमारे नये नियम के दृष्टिकोण से, हम उन में पवित्र आत्मा के कार्यों पर बल को देख सकते हैं।

195

सृष्टि के कार्य में कर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखने के बाद, हम पिता द्वारा बनाई गई सृष्टि की अच्छाई को देखने के लिए तैयार हैं।

196

सृष्टि की अच्छाई

बहुत से धर्म और दर्शनशास्त्र सिखाते हैं कि भौतिक ब्रह्माण्ड न अच्छा है और न बुरा। दूसरे वास्तव में कहते हैं कि संसार बुरा है। उदाहरण के लिए, बहुत से अन्यजाति दर्शनशास्त्र जिनका आरम्भिक कलीसिया ने सामना किया, सिखाते थे कि भौतिक ब्रह्माण्ड भ्रष्ट था, और वास्तव में छुटकारा पाने के लिए मनुष्यों को अपने शरीरों के बन्धन से छूटना होगा। संसार के बारे में यह नकारात्मक विचार एक कारण था जिस के कारण प्रेरितों के विश्वास-वचन ने इस बात पर बल दिया कि परमेश्वर आकाश और पृथ्वी को बनाया। बाइबल में, ब्रह्माण्ड परमेश्वर की अच्छी सृष्टि है जो उसके अच्छे चरित्र को प्रतिबिम्बित करता है।

197

उत्पत्ति अध्याय 1 में, हमें पद 4, 10, 12, 18, 21, 25, और 31 में पूरे सात बार सृष्टि की अच्छाई को याद दिलाया जाता है। और इन में से अन्तिम में, पवित्र वचन कहता है कि सारी सृष्टि केवल “अच्छी” ही नहीं बल्कि “बहुत अच्छी” है। जैसे मूसा ने उत्पत्ति अध्याय 1 पद 31 में लिखा:

198

तब परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था, सब को देखा, तो क्या देखा, कि वह बहुत ही अच्छा है। (उत्पत्ति 1:31)

199

दुखद रूप से, परमेश्वर द्वारा संसार की सृष्टि के बाद, आदम और हव्वा ने भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खाने के द्वारा परमेश्वर के विरूद्ध पाप किया। और मनुष्य के पाप के परिणामस्वरूप, परमेश्वर ने पूरी सृष्टि को स्राप दिया। उत्पत्ति अध्याय 3 पद 17 से 19 इसके बारे में बताता है, जहाँ परमेश्वर ने आदम से कहा:

200

भूमि तेरे कारण शापित है; तू उसकी उपज जीवन भर दुःख के साथ खाया करेगा: और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी, और तू खेत की उपज खाएगा। और अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा। (उत्पत्ति 3:17-19)

201

आदम के पाप के कारण, परमेश्वर ने भूमि को शाप दिया और खेती करना मुश्किल हो गया, और आदम और शेष मनुष्यों को अपने भोजन के लिए कठिन मेहनत करनी पड़ी। और भूमि का यह शाप खेती तक ही सीमित नहीं था। इसने सम्पूर्ण संसार के सारे पहलूओं को प्रभावित किया। पौलुस ने रोमियों अध्याय 8 में इस समस्या के बारे में लिखा जब उसने कहा कि यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों के छुटकारे के बाद स्वयं सृष्टि की पुन: स्थापना होगी। सुनें पौलुस रोमियों अध्याय 8 पद 20 से 22 में क्या कहता है:

202

क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई कि सृष्टि आप विनाश के दासत्व से छुटकारा पाए... क्योंकि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है। (रोमियों 8: 20-22)

203

पौलुस ने सिखाया कि भूमि के शाप ने सृष्टि के प्रत्येक तत्व पर प्रभाव डाला।

204

परन्तु परमेश्वर के शाप के बावजूद, हमें यह सोचने की गलती नहीं करनी चाहिए कि अब सृष्टि अच्छी नहीं है। हाँ, मनुष्य के पाप में गिरने से सृष्टि में बिगाड़ हुआ। परन्तु यह अब भी परमेश्वर का संसार है, और यह अब भी मूलभूत रूप से अच्छा है। पौलुस विवाह की मान्यता और मसीहियों द्वारा हर प्रकार का भोजन करने की आजादी के बारे में लिखते समय इसे बताता है। 1 तीमुथियुस अध्याय 4 पद 4 में उसके वचनों को सुनें:

205

परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है। (1 तीमुथियुस 4:4)

206

ध्यान दें पौलुस यहाँ क्या कहता है। उसने यह नहीं कहा कि सृजी हुई हर वस्तु अच्छी “थी,” बल्कि यह कि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी “है।”

207

यह तथ्य कि भौतिक संसार अच्छा है-परमेश्वर ने इसे अच्छा कहा-इसके हमारे लिए कई व्यवहारिक अर्थ हैं। एक बात, हमें वातावरण की रक्षा करनी है। हम इस सृष्टि के भण्डारी हैं। और दूसरी बात, अन्त में परमेश्वर इस सृष्टि को संभालेगा। वह इसे पुन: बनाएगा; सृष्टि के विनाश की बजाय सृष्टि की पुन: स्थापना होगी। हम सदा के लिए एक नये आकाश और नई पृथ्वी पर रहेंगे। परमेश्वर द्वारा सृजा गया भौतिक संसार अच्छा है। हमारे भौतिक शरीर - हमारी भौतिक उपस्थिति - एक अच्छी बात है। (डॉ. मार्क स्ट्रोस)

208

अत:, चाहे हम विवाह या भोजन या परमेश्वर द्वारा सृजी हुई किसी भी वस्तु के बारे में बात करें, हम इस बात के प्रति निश्चित हो सकते हैं कि यह अच्छी है क्योंकि इसे बनाने वाला पिता अच्छा है। इसीलिए रोमियों अध्याय 1 में पौलुस ने भी कहा परमेश्वर की भलाई उसके द्वारा सृजी हुई वस्तुओं के द्वारा सारे मनुष्यों पर प्रकट है। इसीलिए भजन 19 दावा करता है कि आकाश ईश्वर की महिमा का वर्णन करता है।

209

जाँन वेस्ली ने अठारहवीं सदी की अपनी पुस्तक, सृष्टि में परमेश्वर की बुद्धि का एक सर्वेक्षण, भाग 3, अध्याय 2, में सृष्टि की अच्छाई का वर्णन किया। देखें कि उसने वहाँ क्या लिखा:

210

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक तस्वीर है, जिसमें परमेश्वर की सिद्धता दिखती है। यह न केवल उसके अस्तित्व को, बल्कि उसकी एकता, उसकी सामर्थ, उसकी बुद्धि, उसकी आत्मनिर्भरता, उसकी अच्छाई को भी दिखता है।

211

ब्रह्माण्ड अपने में निहित अच्छाई के द्वारा परमेश्वर की अच्छाई का प्रदर्शन करता है - वह अच्छाई जो इस में है क्योंकि इसे एक अच्छे परमेश्वर ने सृजा है।

212

परमेश्वर की सृष्टि उसकी अच्छाई को प्रतिबिम्बित करती है। यह हमें बताती है कि सृष्टि अपने आप में बुरी नहीं है, पदार्थ में बुराई निहित नहीं है। परन्तु यह हमें यह भी बताती है कि जब परमेश्वर ने संसार को बनाया तो उसे बहुत अच्छा बनाया। सृष्टि में खूबसूरती है। अब पाप के कारण वह खूबसूरती दूषित हो गई है। काँटों और ऊँटकटारों तथा माथे के पसीने ने परमेश्वर की सृष्टि को बिगाड़ दिया है, परन्तु मसीहियों के रूप में हमने एक प्रक्रिया शुरू की है, या परमेश्वर ने हमें पुन: रचने की प्रक्रिया हमारे अन्दर शुरू की है। हम यीशु मसीह में एक नई सृष्टि हैं और जैसे गीतकार कहता है, मसीहियों के रूप में, हम कुछ ऐसा देखते हैं जिसे मसीह रहित आँखों ने कभी नहीं देखा। हम सृष्टि को परमेश्वर के हाथों के कार्य के रूप में देखने लगते हैं। इसलिए मसीहियों के रूप में हम सृष्टि में कला, खूबसूरती, संगठन, निरन्तरता, और जुड़ाव को देखते हैं। और नये आकाश और नई पृथ्वी में हमारी यही अपेक्षा है, जब परमेश्वर की सृष्टि को पूरी तरह नया किया जाएगा और हम सृष्टि का उस तरह से आनन्द उठा पायेंगे जिस प्रकार परमेश्वर ने इसकी इच्छा की थी।

213

डॉ. डेरेक डब्ल्यू. एच. थाँमस

सृष्टि के कार्य और सृष्टि की अच्छाई की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हम सृष्टिकर्ता के रूप में सृष्टि के ऊपर पिता के अधिकार को देखने के लिए तैयार हैं।

214

सृष्टि पर अधिकार

सृष्टिकर्ता के रूप में पिता के अधिकार के बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं। परन्तु हम इसकी केवल तीन मूलभूत विशेषताओं पर ध्यान देंगे: उसका अधिकार अन्तिम, एकमात्र और पूर्ण है। सृष्टिकर्ता के रूप में पिता के अधिकार की अन्तिम प्रकृति के साथ शुरू करते हुए हम इनमें से प्रत्येक पर ध्यान देंगे।

215

अन्तिम

पिता का अधिकार इस अर्थ में अन्तिम है कि उसके पास अपनी सृष्टि के साथ वह जो चाहता है उसे करने की पूरी आजादी है। पवित्र वचन अक्सर उसके अन्तिम अधिकार की तुलना अपनी मिट्टी पर कुम्हार के अधिकार से करता है। हम यशायाह अध्याय 29 पद 16, यशायाह अध्याय 45 पद 9, यिर्मयाह अध्याय 18 पद 1 से 10, और रोमियों अध्याय 9 पद 18 से 24 जैसे स्थानों में इसका वर्णन पाते हैं। देखें पौलुस रोमियों अध्याय 9 पद 20 और 21 में परमेश्वर के अधिकार के बारे में क्या कहता है:

216

क्या गढ़ी हुई वस्तु गढ़नेवाले से कह सकती है कि तू ने मुझे ऐसा क्यों बनाया है? क्या कुम्हार को मिट्टी पर अधिकार नहीं, कि एक ही लोंदे में से, एक बरतन आदर के लिए, और दूसरे को अनादर के लिए बनाए? (रोमियों 9:20-21)

217

निस्संदेह, पौलुस के सवालों के उत्तर स्पष्ट हैं। चूँकि परमेश्वर सब का सृष्टिकर्ता है, इसलिए उसे अपनी सृष्टि के साथ जो वह चाहता है उसे करने की आजादी और अधिकार है।

218

मेरा सोचना है कि कुछ लोग जब यह सुनते हैं कि बाइबल यह सिखाती है कि संसार में जो कुछ होता है उस पर अन्तिम अधिकार परमेश्वर का है, तो शायद उन्हें इससे डर लगता है; वे क्रोधित हो जाते हैं। परन्तु मसीहियों को, वास्तव में जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर कौन है, तो हमें अत्यधिक कृतज्ञ होना चाहिए। इसका मतलब है कि हमारे जीवन सबसे बुद्धिमान, सबसे सामर्थी, और सबसे प्रेमी पिता के हाथों में हैं, जिसने अपने खुद के बेटे को क्रूस पर हमारे लिए दे दिया। और मुसीबतों के समय में, जब हम सोचते हैं कि हमारे जीवनों में क्या हो रहा है तब यह हमें अत्यधिक सांत्वना प्रदान करता है।

219

डॉ. डेनिस जाँनसन

चाहे हम उन सारी बातों को न समझें जो हो रही हैं, यदि आप यीशु मसीह के हैं, तो परमेश्वर आपका पिता है और वह आपसे प्रेम करता है। और आप चाहे किसी भी परिस्थिति से होकर जायें वह आपकी सुरक्षा करता है और आप पर नजर रखता है। इस संसार में हम कई बार अत्यधिक दर्द सहते हैं। परन्तु आप चाहे किसी भी परिस्थिति से होकर गूजरें सब कुछ उसके नियन्त्रण में है। क्या आप अपने जीवन के इस बिन्दु पर इसे स्वीकार कर सकते हैं-उसने इसे आपकी भलाई के लिए आपके शुद्धिकरण के लिए नियुक्त किया है। परमेश्वर हमारे जीवन में हमारे शत्रुओं को बदल देता है, वह उन्हें हमारे मित्र बना देता है इसलिए हम उसके द्वारा जयवन्त से भी बढ़कर हैं जिसने हम से प्रेम किया। हम केवल जय नहीं पाते हैं; लिखा है कि हम उसके द्वारा जयवन्त से भी बढ़कर हैं जिसने हम से प्रेम किया। अत:, परमेश्वर परीक्षाओं और मुसीबतों के द्वारा हमें पवित्र करता है, हमें मसीह के समान बनाता है। इब्रानियों अध्याय 12: वह एक दयालु और बुद्धिमान पिता के समान हमारी ताड़ना करता है। मैं सोचता हूँ कि विश्वास की लड़ाई अक्सर ठीक इसी बिन्दु पर लड़ी जाती है। हमें अपने आप से बार-बार यह कहना है परमेश्वर, परमेश्वर को हमारी चिन्ता है और चाहे मैं इसे न समझ पाऊँ वह इसे मेरे जीवन में मेरी भलाई के लिए, मेरी पवित्रता के लिए, मेरे शुद्धिकरण के लिए ला रहा है।

220

डॉ. टाँम श्रेनर

एकमात्र

अन्तिम अधिकार होने के साथ-साथ, अपने द्वारा सृजी हुई हर वस्तु पर केवल पिता का अधिकार है। सृष्टिकर्ता के रूप में पिता का अधिकार इस अर्थ में विशिष्ट है कि और कोई प्राणी अन्तिम अधिकार नहीं रखता है। अन्तिम अधिकार केवल सृष्टिकर्ता का है, और केवल परमेश्वर ही सृष्टिकर्ता है। और इससे आगे, जब हम आर्थिक रूप से त्रिएकता को देखते हैं, पिता का त्रिएकता के अन्य व्यक्तियों पर भी अधिकार है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना अध्याय 5 पद 26 और 27 में यीशु के वचनों को सुनें:

221

क्योंकि जिस रीति से पिता अपने आप में जीवन रखता है, उसी रीति से उस ने पुत्र को भी यह अधिकार दिया है कि अपने आप में जीवन रखे। वरन उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है। (यूहन्ना 5:26-27)

222

यीशु ने सिखाया कि संसार का न्याय करने का अधिकार उसे पिता के द्वारा दिया गया है। यह अधिकार अन्तिम रूप से पिता का था, और यह केवल उसी का विशेषाधिकार था। परन्तु पिता ने अपने स्थान पर न्याय करने के लिए पुत्र को नियुक्त किया। हम 1 कुरिन्थियों अध्याय 15 पद 24 में भी इसी विचार को पाते हैं, जहाँ ब्रह्माण्ड के ऊपर यीशु का शासन पिता के उच्च शासन के अधीन है।

223

और पवित्र आत्मा के बारे में सच्चाई भी कुछ ऐसी ही है। यूहन्ना अध्याय 16 पद 13, रोमियों अध्याय 8 पद 11, और 1 पतरस अध्याय 1 पद 2 जैसे पद्यांश सिखाते हैं कि पवित्र आत्मा भी पिता की इच्छा को पूरा करता है।

224

और जिस प्रकार पुत्र का अधिकार और आत्मा का अधिकार पिता द्वारा दिया गया है, उसी प्रकार सृष्टि को भी अधिकार दिया गया है। स्वर्गदूत, सांसारिक शासक, और औसत मनुष्यों को भी कुछ हद तक अधिकार प्राप्त है। परन्तु ये सब अधिकार परमेश्वर द्वारा दिए गए हैं, इसलिए पिता का अधिकार सर्वदा सृष्टि के अधिकार से ऊपर है।

225

पूर्ण

अन्तिम और एकमात्र अधिकार होने के अतिरिक्त, पिता का ब्रह्माण्ड पर पूर्ण अधिकार भी है। जब हम कहते हैं कि परमेश्वर का अधिकार पूर्ण है, तो हमारा मतलब है यह उसके द्वारा बनाई गई हर वस्तु पर पूरी तरह से है। इस तथ्य के कम से कम दो महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। पहला, हर कोई परमेश्वर के अधिकार के अधीन है। कोई व्यक्ति या सृजी हुई वस्तु परमेश्वर की आज्ञा मानने की जिम्मेदारी से मुक्त नहीं है।

226

स्वर्गदूत और पिता के प्रति विश्वासयोग्य मनुष्य इसे पहचानते हैं और अपनी इच्छा से उसके अधीन रहते हैं। परन्तु दुष्ट आत्माएँ और अविश्वासयोग्य मनुष्य उसके विरूद्ध बलवा करते हैं और उसकी आज्ञाओं के अधीन होने से इनकार करते हैं। फिर भी, पिता का नैतिक न्याय हर किसी पर लागू होता है। हम चाहे कहीं भी रहें या कोई भी हों, और चाहे हमारी संस्कृति या धर्म कुछ भी हो, हम सब परमेश्वर के प्रति जिम्मेदार हैं।

227

दूसरा, सब कुछ परमेश्वर के अधिकार के अधीन है। उसका अधिकार प्रत्येक विवरण तक है जिसे उसने बनाया है। चूँकि परमेश्वर ने सारी वस्तुओं को बनाया है, इसलिए सृष्टि का कोई पहलू नैतिक रूप से तटस्थ नहीं है। उस ने सब कुछ एक उद्देश्य के लिए बनाया है, और उसे एक नैतिक चरित्र दिया है। और इसका मतलब है कि विषय चाहे जो भी हो, चाहे सृष्टि के किसी भी पहलू की बात हो, कोई नैतिक तटस्थता नहीं है। सृष्टि में हर वस्तु या तो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार कार्य करती है, और इसलिए अच्छी है, या उसके विरूद्ध बलवा करती है, और इसलिए बुरी है।

228

आधुनिक संसार में बहुत से मसीहियों में जीवन को पवित्र वस्तुओं और सांसारिक वस्तुओं में बाँटने की प्रवृत्ति है। हम में से अधिकाँश लोग मानते हैं कि “पवित्र” बातें जैसे कलीसिया, आराधना, सुसमाचार प्रचार, और बाइबल अध्ययन इत्यादि परमेश्वर के अधिकार के अधीन हैं। हम अपने परिवारों और नैतिक निर्णयों को भी पवित्र मानते हुए परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की कोशिश करते हैं। परन्तु बहुत से मसीही सोचते हैं कि परमेश्वर की आज्ञाओं का राजनीति, शिक्षा, और काम जैसे “सांसारिक” कहलाने वाले विषयों पर शासन नहीं है। परन्तु पवित्र दुनिया और सांसारिक दुनिया का यह आधुनिक विभाजन बाइबल के अनुरूप नहीं है। नीतिवचन अध्याय 3 पद 6, सभोपदेशक अध्याय 12 पद 14, और 2 तीमुथियुस अध्याय 3 पद 16 और 17 जैसे पद्यांश संकेत देते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के जीवन के हर क्षेत्र के बारे में बात की है और उसका अधिकार हम जो कुछ करते हैं उन सब पर है।

229

एक ऐसे संसार में जहाँ अधिकार को अक्सर केवल नकारात्मक अर्थ में लिया जाता है, परमेश्वर का अधिकार एक महान बात है जिस पर मसीही विश्वास करते हैं क्योंकि परमेश्वर अब भी इस संसार से प्रेम करता है, सब कुछ उसके नियन्त्रण में है, परमेश्वर अन्त को शुरूआत से जानता है, परमेश्वर सब लोगों का न्याय करेगा। और इस से हमें अच्छा महसूस होना चाहिए क्योंकि हम निश्चिन्त हो सकते हैं कि कोई है जो जानता है वह क्या कर रहा है और भविष्य के लिए यही हमारा विश्वास और भरोसा है।

230

डॉ. साइमन वाइबर्ट

उपसंहार

पिता परमेश्वर पर इस अध्याय में, हमने प्रेरितों के विश्वास-वचन में विश्वास के पहले सूत्र को निकटता से देखा। हमने परमेश्वर की धारणा पर विचार किया जो इस सूत्र में निहित है। हमने परमेश्वरत्व के प्रथम व्यक्ति के रूप सर्वसामर्थी पिता की बात की। और हमने आकाश और पृथ्वी के कर्ता के रूप में पिता की भूमिका को देखा।

231

सारे मसीही धर्मविज्ञान के लिए पिता परमेश्वर के व्यक्तित्व को समझना महत्वपूर्ण है। जब तक हम पवित्र वचन के सच्चे त्रिएक परमेश्वर को न जानें और उसकी आराधना न करें, तो हम एक झूठे परमेश्वर की आराधना करते हैं। और उस व्यक्ति को पहचानना और आदर देना, जिसे पवित्र वचन पिता कहता है, सच्ची आराधना का निर्णायक हिस्सा है। पुत्र और पवित्र आत्मा पिता की आज्ञा मानते हैं और उसका आदर करते हैं - उसकी महिमा को बढ़ाने के लिए कार्य करते हैं। और इसलिए हमारे आज्ञापालन, आदर, और महिमा का केन्द्र केवल वही होना चाहिए।

232